वेदों और पुराणों के आधार पर धार्मिक एकता की ज्योति

कल्कि अवतार और मुहम्मद साहब

लेखक
डॉ. वेद प्रकाश उपाध्याय एम.ए. (संस्कृत वेद)
डी. फिल. धर्मशास्त्रा चार्य डिप. इन. जर्मन

समर्पणम्

श्रीमतां विद्वद्धुरिधौरेयाणां सारस्वतानां पण्डितम्मन्यदारूणद पंज्वरविदारणायौघरूपाणां मानवैक्यप्रतिपादकमत विभूषितमानसाना दर्शनेन सन्मार्ग प्रदर्शनकारिणां दर्शनशास्त्रकृतनिर्मलान्तः करणानां प्रयागविश्वविद्यालयीय संस्कृत विभागाध्यक्षाणां गुरूवर्याणां डा॰ आद्याप्रसादमिश्र महोदयानां करकमले समर्प्यते शोधपुस्तकमिदम्।

साभार :

वेद प्रकाशोपध्याय :

उपाध्यक्ष

सारस्वत वेदान्त प्रकाश संध :

विषय सूची

1-	शोध पुस्तक पर विद्वानों के विचार	3
2-	शोध पुस्तक सहायक ग्रन्थों की सूची	8
3-	प्रस्तावना	10
4-	अवतार का अर्थ	17
5-	अवतार के कारण	18
6-	अन्तिम अवतार के कारण	20
7-	अन्तिम अवतार की विशेषताएँ	21
8-	अन्तिम अवतार का समय	23
9-	स्थान निरूपण	25
10-	संसार के सामाजिक और धार्मिक पतन का काल	27
11-	अन्तिम अवतार सिद्धि	30
12-	वेदों और क़ुरआन की शिक्षाएँ	42
13-	उपसंहार	45

Scanned with CamScanner

शोध पुस्तक पर विद्वानों के विचार

डॉ. गोविन्द कविराज

एम्0 ए0 एम्0 ए0 एम0 एस0 एच0 एम0 डी0 पी0 एच्0 डी0

सर्वदर्शनाचार्य, व्याकरणाचार्य, साहित्याचार्य, आयुर्वेदविज्ञानाचार्य, भिषगाचार्य, वैद्यरत्न, हिन्दी साहित्यरत्न, वेदान्तशास्त्री (अंग्रेज़ी सहित) प्रोफेसर वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय, प्रिंसिपल नेपाली संस्कृत महाविद्यालय वाराणसी-1

प्रेय महाशय,

"कल्कि अवतार और मुहम्मद साहब" ग्रन्थ को मैंने पढ़ा। समस्त संसार में विस्तृत पारस्परिक वैमनस्य को हटाकर मानव मात्र को एक सूत्र में आबद्ध करने के लिए आपने जो अथक प्रयास किया है वह अतीव प्रशंसनीय है।

सेवा में
श्री पं. वेद प्रकाश उपाध्याय
संचालक- सारस्वत वेदान्त प्रकाश संघ
प्रयाग

भवदीय
गोविन्द
19-10-90

प्रो0 डा0 श्री गोपाल चन्द मिश्र

एम0 ए0 पी0 एच0 डी0 धर्मशास्त्राचार्य, वेदाचार्य

वेदविभागाध्यक्ष, संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी-2

ईश्वरीय सृष्टि में मानवता समान है। उसके उत्थान और पतन के नियम एवं स्वरूप भी समान हैं। सभी देशों में महापुरुष या महामानव की आवश्यकता भी समय-समय पर पड़ती है। किसी व्यक्ति का अवतार

Scanned with CamScanner

या महापुरुष या महामानव होना बिना ईश्वरीय प्रकाश के सर्वथा असम्भव है। मुहम्मद साहब अरब देश की आवश्यकता के अनुरूप ईश्वरांशीय महापुरुष थे, इस सत्य को मानने में किसी भी व्यक्ति को हिचक नहीं हो सकती। महापुरुष देशकाल परिस्थिति के अनुरूप भले ही एक भूभाग में सम्मानित या उपदेष्टा हो, पर उसकी महत्ता का वर्णन दूसरे देशवासी अपनी भाषा एवम् संस्कृति के अनुरूप शब्दों में करते हैं। इस भावना को डा0 वेद प्रकाश उपाध्याय एम0 ए0 की "कल्कि अवतार और मुहम्मद साहब" पुस्तक विश्वास दिलाती है। यद्यपि लेखक ने हिन्दु शब्द को भारतीय का पर्यायवाची सिद्ध किया है पर हम जन प्रसिद्धि के भ्रम को ठीक भी मानें तो भी इस पुस्तक में सिद्ध हुई बात मुसलमान भाइयों के विचार में दृढ़ हो जाए कि, हिन्दु मुसलमान नाम के दो घर मानने पर भी एक मूल पुरुष मुहम्मद साहब या कल्कि के माननेवाले होने के नाते अभिन्नता का भाईचारा बढ़ जाएगा, जो दोनों सम्प्रदायों के अनुयायियों के लिए अविरोधी सहअस्तित्व को जगा सकता है। प्रत्येक व्यक्ति की आभ्यान्तरिक विभिन्नता तब तक धृणित नहीं हो सकती जब तक व्यवहार अर्थात सुरक्षा, सुख-दुख सहयोग, खेलकूद आदि में भेद बुद्धि नहीं पनपती। भारत के हिन्दुओं में तथा मुसलमानों में भी उनके सिद्धान्त विचार एवं सम्प्रदाय हैं। पर वे आभ्यान्तरिक भेद, व्यवहार को प्रभावित नहीं करते इसलिए सभी हिन्दु या मुसलमान अपने में एक हैं। उसी प्रकार आभ्यान्तरिक या आध्यात्मिक सिद्धान्त एवं विचार के भेद रहने पर भी यदि मुसलमान हिन्दू व्यवहार में सुरक्षा सुख दुख सहयोग खेल कूद में एकता हृदय से मानने लगें तो वह दिन दूर नहीं कि विश्वव्यापी मानवता के संहार का भय सर्वदा के लिए दूर भाग जाए।

शुभाशंसी

श्री गोपाल चन्द्र मिश्र

4-11-1970

25, Stanley Road
Allahabad

संस्कृत विश्वविद्यालय
7 अध्यापक निवास
जगतगंज-वाराणसी-2

Dated: 15-4-69

Scanned with CamScanner

1- श्री वेदप्रकाश उपाध्याय (शोधछात्र) ने हाल ही में मुहम्मद साहब और कल्कि अवतार पर एक पुस्तिका प्रकाशित करने की योजना बनाई है। मैंने पुस्तक के प्रारूप को देखा है। लेखक ने एक विचारणीय विषय पर लेखनी उठाई है काफी खोजकर अपना मत सिद्ध करने का प्रयत्न किया है। उनका अध्यवसाय तथा दृष्टिकोण सराहनीय है।

स0 प्र0 चतुर्वेदी, एम0 ए0 (संस्कृत-वेद) व्याकरणाचार्य

भूतपूर्व अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय

2- कल्क्यवतार मोहम्मदयोस्तुलनात्मकाध्ययन वैशिष्ट् यबोधकन व्यशैली समीक्ष्य विशिष्टं तुष्यन् मदीयं मनः रचयितुर्विशिष्टविकासकासनतया आधुनिक युगीनजनैक्यसम्पादनतया च परं प्रसीदति, श्रीमानीशः रचयितारं वैशिष्टेनावलोकयत्वितिशम्।

भव्यरचनमिदमद्य विलोक्य कस्य जनस्य न हृष्येच्चेतः।

जय किशोर विदुषः श्रीलस्य सम्मतिरस्तु रचयितुश्रेयः।।

झोपाह श्री जाकिशोर शर्मा, व्याकरणाचार्य

प्रधानाचार्य, सौदामिनी संस्कृत महाविद्यालय, इलाहाबाद

3- कल्कि और मुहम्मद साहब का तुलनात्मक अध्ययन विषयक शोधपुस्तक को पढ़कर हृदय में सर्वधर्मसमन्वय की पूर्व प्रतिष्ठित भावना और भी दृढ़ हुई।

पुस्तक में प्रस्तुत प्रमाणों एवं उद्धरणों को देखकर निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि इस्लाम की उत्पत्ति का मूल बीज वैदिक धर्म में ही निहित है। उस (कल्कि) सन्देष्टा की धर्म-विजय हेतु प्रयुक्त सामग्री में घोड़ों व तलवार आदि का संकेत किसी भी बौद्धिक व्यक्ति को यह सोचने के लिए बाध्य कर सकता है कि आज वह भविष्य की कल्पना का विषय नहीं अपितु भूतकाल का पात्र रह चुका है। पुस्तक का पर्यवेक्षण अन्ततः यही सिद्ध करता है कि भागवत् के कल्कि हमारे मुहम्मद साहब ही हैं।

Scanned with CamScanner

वस्तुतः उस परमसत्ता की सर्वमयता के लिए इन प्रमाणों की कोई आवश्यकता तो नहीं हैं, परन्तु शुभशंसा के रूप में मैं यही कहूँगा कि उपाध्याय जी का यह प्रयास हिन्दु-मुस्लिम विचार वैभिन्नय को धो डालने में समर्थ हो।

श्री अशोक तिवारी

लवेदी, इटावा (उ0 प्र0)

4- कल्कि और मुहम्मद साहब का तुलनात्मक अध्ययन विषयक शोध पुस्तक निस्सन्देह नवीन, अन्वेषणात्मक, तर्कपूर्ण विचारों से युक्त, मुसलमानों और हिन्दुओं के असमान दृष्टिकोण को एक सूत्र में बाँधते हुए ऐसे संसार की स्थापना करेगी, जो कल्याण कारक, आनन्दपूर्ण एवं क्लेशरहित होगा।

श्री राम भवन मिश्र

भोज कोल्हुआ, चील्ह, मिर्ज़ापुर उ0 प्र0

5- कल्कि और मुहम्मद साहब का तुलनात्मक अध्ययन, पुस्तक पढ़ने से मुझे यह विश्वास हो गया कि कल्कि और मुहम्मद एक ही हैं।

श्री इन्द्रजीत शुक्ल, वर्दवान

6- पं0 वेदप्रकाश उपाध्याय द्वारा किया गया कल्कि अवतार और मुहम्मद साहब का तुलनात्मक अध्ययन विषयक शोधकार्य मैं ने भली-भाँति देखा।

इस लघु पुस्तक में विद्वान् शोधकर्त्ता ने भारतीय पौराणिक साहित्य और इस्लामी साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन करके कल्कि अवतार के सम्बन्ध में जो महत्वपूर्ण अन्वेषणात्मक कार्य किया है वह वर्तमान धार्मिक संघर्षों का उन्मूलन करने में अत्यधिक उपकारी होगा। इस प्रकार सम्पूर्ण विश्व में एकेश्वरवाद का पुनः प्रसार होगा और समस्त मानवजाति में साधारण भाईचारे का प्रेम उत्पन्न होगा। हमें पूर्ण आशा है कि इस लघु ग्रंथ को सभी सम्प्रदाय के अनुयायी पसन्द करेंगे और

Scanned with CamScanner

अपने सीमित अन्धविश्वासों से उठकर विश्वबन्धुत्त्व के प्रकाश में आएँगें। इस प्रकार यह प्रयास एक महान् समन्वय का सन्देश देगा।

हमारी यह शुभकामना है कि लेखक का यह प्रयास समाज के लिए कल्याणकारी हो।

डॉ0 रामसहाय मिश्र, शास्त्री

बहादुरगंज, इलाहाबाद

7- इस शोधपुस्तक को पढ़ने मात्र से मुझे हिन्दु-मुसलमान दो व्यापक सम्प्रदायों के बीच उलझी गुत्थियों का सुलझना और साथ ही हिन्दुत्व का वह प्राचीन व्यापक रूप पुनः समक्ष आता हुआ दिखाई पड़ रहा है।

प0 राम बहादुर मिश्र

लौगावाँ, कुभियावाँ, इलाहाबाद

8- अभी तक ऐसी कोई भी अन्वेषणात्मक पुस्तक नहीं निकली, जिसने विभिन्न सम्प्रदायों को एकता के सूत्र में बाँधने का प्रयास किया हो।

अशोक कुमार जायसवाल "सारस्वत"

सदस्य, प्रयाग कार्यकारिणी समिति

सारस्वत- वेदान्त प्रकाश संघ, इलाहाबाद (उ0 प्र0)

Scanned with CamScanner

शोध पुस्तक सहायक ग्रन्थों की सूची

संस्कृत –

1– ऋग्वेद संहिता 2– यजुर्वेद संहिता 3– सामदेव संहिता

4– अथर्ववेद संहिता 5– श्वेताश्वरोपनिषद् 6– केनोपनिषद्

7– महाभारतम्– महर्षिवेदव्यासप्रणीतम 8– श्रीमद्भगवद्गीता

9– श्रीमद्भागवतपुराणम्– महर्षिवेदव्यासप्रणीतम, गीताप्रेस गोरखपुर सं॰ 2021

10– भविष्य पुराणम्– महर्षिवेदव्यासप्रणीतम

खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, बम्बई 1951

11– कल्किपुराणम्– महर्षिवेदव्यासप्रणीतम, सं0 1963 श्री वेंकटेश्वर स्टीम प्रेस, बम्बई

हिन्दी

12– हिन्दू-मुस्लिम एकता– पं0 सुन्दरलाल जी, हिन्दुस्तानी कल्चर सोसाइटी, 145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

13– अल-क़ुरआन

उर्दू और अंग्रेज़ी

14- Shimail Tirmizi- Maulana Mohammad Zakaria

15- Sarwar-e-Alam- Mohammad Muslim, Published at Jayyad Press, September, 1960 A.D. Kishanganj Delhi.

16- Sirtunnabi- Shibli Nomani and Sayyad Sulaiman Nadawi, Published from Matba Maarif, Azamgarh, Fourth Edition 1958 A.D.

Scanned with CamScanner

17- Asah-us-Siyar- Hakim Abul Barakat, Abdur-Rauf, Publisher Noor Mohammad, Asag-ul-Matba, Karachi, September 1932 A.D.

18- Jamaul-Favaid-Sulaiman, Publisher Ashiqilahi, Khairia press, Meerut.

19- Mohammed and Mohamedenism, by Rev. Bosworth Smith.

20- Decline and fall of the Roman Empire. by Edwerd Gibbon, Publisher from E. P. Dutton & Co. New York, 1210 A.D.

21- The Speeches of Mohammad by Lanepoole, Published by Macmillan & Co. (London) 1882.

22- An Encyclopedia of world History- W.L. Langer, Published by George G. Harrap & co. Ltd. Printed in U.S.A.

23- A History of Civilization in Ancient India- by R.C. Dutt, Revised Edition, 1893, Published by Kegan Paul, Trench Trubner & Co. Ltd. (London)

24- Apology for Mohammad- by Godfrey Higgins, Published by Allahabad Reform Society, Dariyabad 1929 A.D.

25- Life of Mohammad- Sir William Muir, Published from Smith, Elder & Co. (London) 1877 A.D.

Scanned with CamScanner

प्रस्तावना

इस शोध पुस्तक में प्राचीन भारतीय परम्परा तथा इस्लामी परम्परा के समन्वय को प्रस्तुत किया गया है। इस्लामी परम्परा में जो स्थान रसूलों नबियों या पैग़म्बरों का है, वही स्थान भारतीय परम्परा में अवतारों का है। मुसलमान मुहम्मद साहब को अन्तिम सन्देष्टा मानते हैं और भारतीय परम्परा कल्कि को अन्तिम अवतार। विदेशों में केवल सन्देष्टा आते हैं और भारत में केवल अवतार, यह असम्भव है, क्योंकि सभी भूमि परमेश्वर की है उसमें वैषम्य का स्थान नहीं है। सभी देशों के तत्तद् साहित्यों में उन्हीं देशों की महिमा का गुणगान हुआ है अतः कोई भी स्वदेशी या विदेशी अपने देश को नीचा नहीं करेगा। सन्देष्टा केवल अरब में ही आए, भारत में नहीं, यह भी एकांगी विचार है, और अवतार केवल भारत में ही हुए विदेशों में नहीं, यह भी एकांगी विचार हैं। मुहम्मद साहब अन्तिम सन्देष्टा हैं, यह जानकर मुझे पुराणों में कल्कि विषयक चरित पढ़ने की उत्कंठा हुई। भारतीय परम्परा के अनुसार पहले कुछ कलियुग बीत गए, उनमें कल्कि के अवतार में जो घटनाएं घटीं और इस कलियुग में जो घटनाएं घटी हैं उनकी तुलना मैंने मुहम्मद साहब के जीवन से की जो प्रायः समान उतरीं। अल्पमात्र जो कहीं कुछ अन्तर पड़ा वह जैसे राम के चरितों में अन्तर पड़ जाता है उसी प्रकार हुआ, और उसका समाधान लोग यह कहकर देते हैं कि "हरि अनन्ता हरि कथा अनन्ता" वही कहकर मैं भी कह रहा हूँ।

मैं कल्कि अवतार को कथा इसलिए नहीं कहना चाहता, क्योंकि कथा कल्पितवृत्तान्ता सत्यार्थास्यायिका के सिद्धान्त से इसको आख्यायिका ही मानना युक्तिसंगत है।

वैज्ञानिक अणुविस्फोटकों से जो सत्यानाश सम्भव है, उनका निराकरण धार्मिक एकता सम्बन्धी विचारों से हो जाता है। जल में

Scanned with CamScanner

रहकर मगर से बैर करना उचित नहीं। इस कारण मैंने वह शोध किया जो धार्मिक एकता का आधार है। राष्ट्रीय एकता (National Intigration) के समर्थकों द्वारा इस शोधपत्र पर कोई आपत्ति नहीं होगी। आपत्ति तो कूपमण्डूक लोगों, यदि वे कूएं के बाहर निकलकर संसार को देखें तो कुएं को ही संसार मानने की उनकी भावना हीन हो जाएगी। ईश्वर की आज्ञा से ईश्वरीय वाणियों का प्रचार हो, इस उद्देश्य से मैंने इस प्रकार के शोधकार्यों में हाथ डाला है। इसके पूर्व कुछ लोगों ने इस विषय पर कुछ लिखा था, या नहीं यह स्पष्ट कहा नहीं जा सकता, परन्तु "सरवरे-आलम[1]" में इतना संकेत है कि मुहम्मद साहब और कल्कि एक ही हैं। मेरे इस शोधपत्र का प्रचार होगा, स्वदेश और विदेशों में, क्योंकि ईश्वर की सहायता से यह पुस्तक लिखी गई है। इसमें जो तर्क संगत बातें आई हैं, वह मेरे विचार नहीं, या तो वे वेदों पुराणों के विचार है, या मेरे अन्दर हुई ईश्वरीय प्रेरणा के।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस शोध पुस्तक के अवलोकन से भारतीय समाज में ही नहीं बल्कि निखिल भूमण्डल में एकता की लहर दौड़ पड़ेगी, और धर्म के नाम पर होनेवाले कलह शान्त होंगे। यदि लोगों की बुद्धि काम करेगी, तो परस्पर एक दूसरे के पर्वो में हाथ बंटाकर स्वयं एकता के प्रतीक बनेंगे। नाम से कोई हिन्दु, मुसलमान या ईसाई नहीं बनता। यदि मैं सिराजुल-हक़ को सत्यदीप, अब्दुल्लाह को रामदास या रामयश तथा अब्दुर्रहमान को भगवानदास कहूँगा तो वे बुरा नहीं मानेंगे, क्योंकि उनके नामकों का संस्कृत में अनुवाद यही होता है, यदि वे चाहें तो मेरे नाम का अनुवाद अरबी भाषा में नुरुलहुदा भी कर सकते हैं। ईश्वर से मेरी यही प्रार्थना है कि सभी वर्गों में विशेषकर हिन्दू और मुसलमानों में पूर्ण मेल हो, तथा मेरा यह शोधपत्र लोगों में सद्भावना का संचार करें। विश्व में बन्धुत्व हो और सभी का कल्याण हो।

कल्कि और मुहम्मद साहब के तुलनात्मक अध्ययन को पढ़कर कहीं लोगों को यह न शंका होने लगे कि मुहम्मद साहब के चरित्रों का

1– सरवरे आलम- मुहम्मद मुस्लिम, Published at Jayyad Press, Sept. 1960 A.D. Kishanganj Delhi

Scanned with CamScanner

आधार लेकर लोगों ने कल्कि का भावी वृत्तान्त बना डाला है, इसलिए मैंने जिन सनातन धर्मग्रन्थों का आश्रय लिया है, उनमें से पुराणों के रचनाकाल के विषय में कोई भी लेखक किसी निश्चित निष्कर्ष पर नहीं पहुँचा। पाश्चात्य इतिहासकारों ने श्रौतसूत्रों, उपनिषदों, पुराणों आदि के कालनिर्धारण करने के समय स्थान-स्थान पर शायद (Probably) शब्द का प्रयोग प्रचुरता से किया है, जो उनके निर्णय की अनिश्चितता का प्रतीक है। सर्वप्रथम मैं उन पाश्चात्य विद्वानों का मत पुराणों के रचनाकाल के विषय में क्या है? इसका उल्लेख करके कालनिर्णय करूँगा तब विषय-वस्तु का प्रारम्भ करूँगा।

पुराणों का समय डब्ल्यू0 एल0 लांगर के अनुसार ईसा के 400 वर्ष बाद का है।[1] इनके अनुसार रामायण और महाभारत की रचना दो सौ ई0 पूर्व की है[2]। लांगर महोदय के उपर्युक्त कथन में ये विप्रतिपत्तियाँ हैं।

1- रामायण के रचयिता वाल्मीकि और महाभारत की समकालीनता से पुष्ट होता है, जो नितान्त असंगत है, क्योंकि आदि कवि वाल्मीकी व्यास जी के समकालीन कभी नहीं हो सकते। इसका कारण यह है कि राम के ही समय के वाल्मीकि थे, जैसा कि राम द्वारा परित्यक्त सीता के संरक्षण का कार्य वाल्मीकि को ही अपने आश्रम में करना पड़ता है। इस बात से सिद्ध होता है। इतना ही नहीं, बल्कि अपने महाकाव्य की पूर्ति भी वाल्मीकि जी अपने आश्रम में करते हैं, बात की भी पुष्टि होती है।

2- राम की जीवन-घटना त्रेता युग की है, अतः त्रेता युग में ही बाल्मीकि द्वारा रामायण की रचना किया जाना सम्भव है, और द्वापर युग में वेदव्यास जी द्वारा महाभारत की रचना।

1- Puranas (dis-ordered genealigies of Kings Compounded with legends, Put in present from, fourth Century A.D. and Later). Encyclopedia of world History, by W.L. Langer (Page 43)

2- The Mahabharat and epic poems Composed by several generations of bards, seems to have taken from about the second century B.C. Although probably revised early in our era.
Enclopidia of world History by W.L. Langer (page 42)

Scanned with CamScanner

3- शकराज का ईसा से मिलन भविष्य पुराण से सिद्ध है[1]। और वह शकराज विक्रमादित्य का परवर्ती[2] था, अतएव विक्रमादित्य का समय ईसा से पूर्व का सिद्ध होता है।

भाषा की दृष्टि से पुराण पाणिनि की अपेक्षा पर्याप्त प्राचीन हैं, क्योंकि वह भाषा पणिनीय व्याकरण के बन्धनों से रहित है। उसमें संस्कृत शब्दों को प्रयोग आर्ष प्रयोग है, जो वैदिक और लौकिक संस्कृत के मध्य काल का है। पाणिनि का समय लांगर के अनुसार 350 ई0 पू0 से लेकर 300 ई0 पू0 के मध्य है[3]। इसके अतिरिक्त बुद्ध जी का समय 563 ई0 पू0 से लेकर 483 ई0 पू0 के मध्य है[4]। बुद्ध जी ने अपना धर्म प्रचार "पालि" भाषा में किया, जो उस समय की बोल-चाल की भाषा थी, यह बौद्ध धर्मग्रन्थों से सिद्ध होता है। भाषा की विकासशीलता होने के कारण संस्कृत भाषा का रूप बिगड़ कर पालि से प्राकृत तथा प्राकृत से अपभ्रंश तथा आज हिन्दी हो गया। संस्कृत भाषा की स्थिति बुद्ध जी के पूर्व सिद्ध होती है। कोई भी भाषा बहुत ही शीघ्र नहीं बदल जाती, बदलते बदलते हज़ारों वर्ष लग जाते हैं। बुद्ध जी के पहले व्याकरण के नियमों में बुद्ध संस्कृत भाषा की बातचीत में प्रयोग होता था। उस निश्चित व्याकरण के संस्थापक पाणिनि का समय, बुद्ध जी के समय में एक हज़ार वर्ष जोड़कर 1563 ई0 पू0 के लगभग सिद्ध होता है।

---

1. एकदा तु शकाधीशो हिमतुंग समाययौं। 21
हुणदेशस्य मध्ये वै गिरिस्थ पुरुषं शुभमृ।
ददर्श बलवान् राजा गोरांग श्वेतवस्त्रकम्।। 22
को भवानिति तं प्राह स होवाच मुदान्वितः।
ईशपुत्रं च मां विद्धि कुमारीगर्भसम्भव्।।23
ईशामसीह इति च मम नाम प्रतिष्ठितम्।।31
भविष्य पुराण, प्रतिसर्गपर्व, तृतीय खण्ड, द्वितीय अध्याय

2. विक्रमादित्यपौत्रश्च पितृराज्यं गृहीतवान।
जित्वा शकान् दुराधर्षां श्चीनतैत्तिरिदेशजान्।। 18
एकदा तु श्काधीशो हिमतुंगं समाययौ। 21
भविष्य पुराण, प्रतिसर्गपर्व, तृतीय खण्ड, द्वितीय अध्याय

3. Panini (? G. 350-300)
Encyclopedia of world History, by W.L. Langer. (Page 42)

4. Buddism was founded in the same period and pegion by Siddhariha (? 563-483?) of the clan of Gautama and the hill of tribe of Sakya, who attained "Illumination" (bodhi) Encyclopedia of world History by W.L. Langer (page 41)

Scanned with CamScanner

पाणिनि के सूत्रों की रचना से यह भी सिद्ध होता है कि उस समय लेखन के अभाव के कारण कंठाग्र कराने की प्रक्रिया थी, जो सूत्रों के माध्यम से सुगम थी। पुराणों की भाषा पाणिनि से पूर्व की है, अतः आर्ष संस्कृत में पुराणों की रचना ई0 पू0 2502 से 1563 ई0 पू0 के मध्य में सिद्ध होती है। यह तो रहे ऊपरी प्रमाण जो, प्रायः निराधार से हैं, क्योंकि सभी विद्वानों का मत सन्देहपूर्ण हैं और वे उन मतों की स्थापना के समय स्वयं 'शायद' सम्भव है या प्रश्नवाचक चिन्हों का प्रयोग करते हैं। अब हम पुराणों के अन्तरंग प्रमाण के आधार पर उनका रचना काल प्रस्तुत करते हैं।

अट्ठारह पुराणों में भविष्य पुराण भी एक है, जिसमें भविष्य की बातें बताई गई हैं। जिन स्थानों में "लृट" के स्थान में "लट्" लकार का या "लड" लकार का प्रयोग हुआ है वहाँ पर व्यत्यो बहुलम् सूत्र से वैदिक संस्कृत की तरह तिङ्. का व्यत्यय हो गया है, अतएव पुराणों की आर्ष भाषा निःसन्देह लौकिक संस्कृत से उत्कृष्ट है। भागवतपुराण द्वादश स्कन्ध, द्वितीय अध्याय में कल्कि के पैदा होने की भविष्यवाणी की गई है और उनकी विशेषता भी बताई गई है। प्रथम स्कन्ध में भी चौबीस अवतारों के प्रकरण में "कल्कि" को अंतिम अवतार माना गया है। भविष्यपुराण प्रतिसर्ग पर्व व्यास जी भविष्य में होनेवाली गाथा को आदम से प्रारम्भ करते हैं कि हे मन! भविष्य में होनेवाली सूत जी द्वारा वर्णित कलियुग की पूर्ण गाथा सुनकर तृप्ति प्राप्त करो[1]। इस कथन से यह सिद्ध होता है कि पुराण आदम के पूर्ववर्ती ठहरे। द्वापर युग को समाप्त होने में दो हज़ार दो सौ आठ वर्ष शेष रह गए थे, तब आदम का जन्म हुआ था[2]। कलयुग के बीते हुए 5060 वर्ष हो रहे हैं, अतएव आदम

---

[1]. मनः श्रृतु ततो गाथां भावीं सूतेन वर्णितम्।
कलेयुर्गस्य पूर्णां तां तच्छुत्वा तृप्तिमावह।।
भविष्य पुराण, प्रतिसर्गपर्व, प्रथम खण्ड, चतुर्थ अध्याय, श्लोक 25

[2]. द्विशाष्ट सहस्रेद्वेशेषे तु द्वापरे युगे।
बहुकीर्तिमती भूमिभविता कीर्तिमालिनी। 28
इन्द्रियाणि दमित्वा यो ह्यात्मध्यानपरायणः।
तस्मादादमनामासौ पत्नी हव्यवती तथा।29।
भविष्य पुराण, प्रतिसर्ग पूर्व, प्रथम खण्ड, चतुर्थ अध्याय

Scanned with CamScanner

आज से 5070+2208=7278 वर्ष पहले हुए। उस समय लेखन कला थी नहीं, अतएव श्लोकों को कंठाग्र ही रखना पड़ता था। न्यूह के समय से संस्कृत भाषा का पतन होने लगा, क्योंकि विष्णु ने प्रसन्न होकर संस्कृत भाषा को अपशब्द करके न्यूह के लिए प्रदान कियां। उस भाषा का नाम म्लेच्छा भाषा रखा गया[1]। न्यूह के तीन पुत्र हुए– सिम हाम और याकूत[2]। यहाँ से भाषा परिवार बंटा, सिम से सेमेटिक, हाम से हेमेटिक। आदम का पूर्ववर्ती होने के कारण पुराणों का रचना काल आज से 7278 वर्ष पूर्व सिद्ध होता है, जो सर्वथा सम्भाव्य है, भले ही कुछ लोगों को आपत्ति हो। आदम के पहले अर्थात पुराणों के काल में 4 वर्ण थे, परन्तु वे गुण और कर्म के विभाग से थे, न कि जाति के विभाग से। शूद्र ब्राह्मण बन जाता था और ब्राह्मण भी शूद्र बन जाता था[3]। जब प्रजाओं का पालक परमेश्वर एक है, तो जातिकृत भेद हो ही नहीं सकता[4]। चलने फिरने की क्रिया, शरीर, वर्ण, केश, सुख, दुख, खून, त्वक्, मांस, मेदा, अस्थि रस की दृष्टि से तो सभी मनुष्य बराबर हैं, मनुष्यों में जातिगत चार भेद क्यों हो सकते हैं[5]? जो ऋग्वेद में

---

[1]– म्लेच्छभाषा कृता तेन वेदवाक्यपरांङ्. मुखा।
कलेश्च वृद्धये ब्राह्मी भाषा कृत्वाऽशव्दगाम्।।3।
न्यूहाय दत्तवन्देवो बुद्धीशो बुद्धिगः स्वम्।
विलोमं च कृतं नाम न्यूहेन त्रिसूतस्य वै।।4।।
भविष्य पुरण, प्रतिसर्गपर्व, प्रथम खण्ड
पंचम अध्याय

[2]– सिमश्च हामश्च तथा याकूतो नाम विश्रतः।।5।।
भविष्य पुराण, प्रतिसर्गपर्व, प्रथम खण्ड
पंचम अध्याय

[3]– शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम्।
क्षत्रियो याति वित्रत्वं विद्याद्वैश्यं तथैच च ।।47।
भविष्य पुराण, ब्रह्मपर्व, 40 अध्याय

[4]– स एक एवात्र पतिः प्रजानां। कथं पुनर्जा तिकृतः प्रभेदः।
प्रमाणदृष्टान्तनयप्रवादैः परीक्ष्यमाणो विघटत्वेति।।44।
भविष्य पुराण, ब्रह्मपर्व 40 अध्याय

[5]– पाद प्रचारैस्तनुवर्णकेशैः
सुखने दुःखेन च शोणितेन।
त्वङ्. मांसमेदो स्थिरसैः समाना।
श्चतुष्प्रभेदा हि कथं भवन्ति।।42।

Scanned with CamScanner

चार– ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र के नाम आए हैं, उनका तात्पर्य यह नहीं है, कि वे जाति के सूचक हैं। उनका अर्थ है कि गुण तथा कर्म के आधार पर चार वर्णों की स्थापना[1]। चार वर्णों में से जिसे जो अच्छा लगता था, उसी को वह स्वीकृत करता था।

इस प्रकार पुराणों का रचनाकाल एवं चातुर्वर्ण्य व्यवस्था का वर्णन करके यह बतलाना आवश्यक समझता हूँ, कि पुराणों में क्षेपक को स्थान नहीं क्योंकि भागवतपुराण में एक अध्याय में अट्ठारहों पुराणों की श्लोक संख्या दी हुई है, जिसके कारण एक भी श्लोक बढ़ाने का किसी को साहस ही नहीं।

अब मैं ईश्वर का नाम लेकर अन्तिम अवतार का विवरण प्रस्तुत करूँगा जिसके लिए मुझे निर्देश विद्वर्य प्रोफेसर सरस्वती प्रसाद जी चतुर्वेदी, भूतपूर्व अध्यक्ष संस्कृत विभाग प्रयाग विश्वविद्यालय तथा 1008 स्वामी श्री रामानन्द जी सरस्वती से मिला है, अतएव मैं इन दोनों विद्यामूर्तियों का कृतज्ञ हूँ।

लेखक **पं0 वेद प्रकाश उपाध्याय**

एम0 ए0 (संस्कृत-वेद)

शोधछात्र संस्कृत विभाग,

प्रयाग विश्वविद्यालय

भविष्य पुराण, ब्रह्मपर्व, 40 अध्याय

[1]– ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।
उरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भयां शूद्रो अजायत।।
ऋग्वेद 10-90-12, अथर्ववेद 19-6-6, वा0 य0 31-11
तै0 आ0 3-12-5

Scanned with CamScanner

अवतार का अर्थ

"अवतार" शब्द 'अव' उपसर्गपूर्वक 'त' धातु में 'धत्र्' प्रत्यय लगाकर बना है। अवतार शब्द का अर्थ यह है कि पृथ्वी में आना। ईश्वर का अवतार शब्द का अर्थ है कि 'सब को सन्देश देनेवाले महात्मा का पृथ्वी में जन्म लेना'।

परमेश्वर सर्वव्यापी है, किसी निश्चित स्थान में उसका रहना और वहाँ से उसका कहीं आना जाना यह कथन उस असीम को सीमित बनाता है। कहीं उसका तेज विशेष सुव्यक्त नहीं होता, जैसे तुषाराच्छादित सूर्य का तेज बन्द दीखने लगता है, परन्तु उससे सूर्य का तेज कम नहीं होता। ऊपर के सात लोगों में सर्वोच्च लोक (अर्थात् सातवें आसमान) में उसकी उपलब्धि है, जेहाँ न तो सूर्य चमकता है और न ही चन्द्रमा या तारों का दर्शन होता है[1]। वहाँ पर ईश्वर का इतना अधिक प्रकाश (नूर) फैला हुआ है कि सूर्य और चन्द्रमा की ज्योति उसके सामने क्या है। जिस प्रकार सूर्य के प्रकाश से सभी ग्रह (Planet) प्रकाशित होते हैं। उसी प्रकार उस परमपिता परमेश्वर के तेज से सभी प्रकाशित होते हैं। उसी से सम्बद्ध अर्थात् उनका कोई श्रेष्ठ (beloved) महात्मा लोगों का कल्याण करने के लिए जगतीतल में अवतीर्ण होता है, या जगतीतल के अवतीर्ण लोगों में से निर्मल हृदय एवं सच्चरित्र किसी एक व्यक्ति में ज्ञान भर दिया जाता है, और ईश्वर के तेज का उसे साक्षात्कार हो जाता है, जिसके कारण बिना अध्ययन किए हुए ही उसमें सर्वोत्कृष्ट ज्ञान भर जाता है। ईश्वर का अवतार शब्द में 'का' सम्बन्ध कारक का चिह्न है, अतः स्पष्ट ही है कि ईश्वर से सम्बद्ध व्यक्ति का अवतीर्ण होना। ईश्वर से सम्बद्ध कौन है? उससे

---

[1]– 'न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं
नेमा विद्युतो भाति कुतोऽयमग्निः।
तमेव भान्तमनुभाति सर्व
तस्य भासा सर्वीमेदं विभाति।।
श्वेताश्वतरोपनिषद्, अध्याय6 मन्त्र 14'

Scanned with CamScanner

सम्बद्ध वही है, जो उसका भक्त है। ऋग्वेद में ऐसे व्यक्ति को 'कीरि'[1] कहा गया है। 'कीरि' शब्द का अर्थ हिन्दी में 'ईश्वर का प्रशंसक' और अरबी में 'अहमद' होता है। सन्देह यह उठता है, कि इस तरह तो जितने भी ईश्वर के प्रशंसक हैं, सभी अहमद कहे जाएंगे, परन्तु ऐसा नहीं है। ईश्वर की प्रशंसा करनेवाले पर 'कीरि' शब्द या 'अहमद' शब्द रूढ़ हो गया। जिसपर शब्द की जो रूढ़ि हो जाती है, उसी का बोध हो जाता है। 'आदम' भी तो ईश्वर के प्रशंसक थे, परन्तु उनका नाम 'अहमद' नहीं हुआ। तात्पर्य यह निकला कि ईश्वर से सम्बद्ध प्रत्येक व्यक्ति 'कीरि' नहीं हो सकता। यहाँ हमें केवल अन्तिम अवतार का वर्णन करना है, न कि सन्देष्टाओं या अवतारों का इतिहास कहना। इतना तो कहना आवश्यक समझता हूँ, कि 'अवतार'[2] शब्द संस्कृत भाषा में और 'प्रोफ़ेट' अंग्रेज़ी भाषा में 'नबी' अरबी भाषा में संसार के उद्धारकों के लिए प्रयोजनीय विश्रुत शब्द हैं। हर देश के लिए अलग-अलग अवतार हुए हैं। क्योंकि एक अवतार से सम्पूर्ण देशों का हित असम्भव है। परन्तु अन्तिम अवतार की बात और है, उनका जब उद्घाटन होता है, तब उसका धर्म संसार से सभी धर्मों में सन्निहित हो जाता है। अब अम 'अवतार' के कारणों पर विचार करते हैं।

अवतार के कारण

1- लोगों की अधर्म में प्रवृत्ति, और धर्म के वास्तविक स्वरूप से दूर हो जाना है[3]।

2- मूलधर्म में मिश्रण (Mixture) कर लेना अर्थात् अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए धर्म में धर्मभास को मिला लेना।

3- धर्म के नाम पर अधर्म करना।

---

[1]– 'यो रध्रस्य चोदिता यः कृशस्य
यो ब्रह्मणो नाधमानस्य कीरेः
ऋग्वेद 2-12-6'

[2]– हिन्दू-मुस्लिम एकता, लेखक सुन्दरलाल जी, पेज 29-30

[3]– यदा यदा हि धर्मस्य, ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य, तदात्मानं सृजाम्यहम्।। गीता

Scanned with CamScanner

4- धर्म के स्वरूप से अनभिज्ञ लोगों को अधर्म का धर्म के रूप में उपदेश देना।

5- ईश्वर के भक्तों को कष्ट देना।

6- पापों एवं अत्याचारों का बढ़ना।

7- घोर हिंसा तथा अराजकता का फैल जाना।

8- अपने पेट तथा परिवार के पोषण तक ही धर्म को सीमित रखना।

9- ईश्वर द्वारा प्रदत्त उपभोग की वस्तुओं का विषमता से उपभोग[1]।

10- साधुओं की रक्षा करने के लिए एवं दुष्टों का संहार करने के लिए अवतार होता है।[2]

11- धर्म के विनाशोन्मुख होने पर अवतार होता है।

12- मार-काट तथा लूटपाट के बढ़ने पर अवतार होता है।

13- युगानुसार लोगों की प्रवृत्ति को देखकर तथा उनके लिए उपदिष्ट धर्म में विश्रृंखलता देखकर धर्म के पुरातन सिद्धान्तों को नया रूप देकर उनसे पालन करवाने के लिए।

उपर्युक्त कारणों के उपस्थित होने पर अवतार होता है।

---

[1]– इस आज्ञा का खण्डन होने पर-
ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।
यजुर्वेद, 40 अध्याय, मं0 1

[2]– 'परित्राणाय साधूना विनाशाय च दुष्कृताम्।'
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।

Scanned with CamScanner

अन्तिम अवतार के कारण

अवतार के कारणों का संक्षिप्त विवेचन करके अब हम आपको अन्तिम अवतार के कारणों से परिचित कराना चाहते हैं।

1- **बर्बरता का साम्राज्य-** लोगों में क्रूररता भी भावना तथा अपनी आत्मा के महत्व को न समझना तथा दूसरों के प्राणों की परवाह न करना। राजाओं में दुष्टता का संचार, करों का बढ़ा देना। सच्चे धर्म को बतानेवालों पर ईंटों का प्रहार।

2- **पेड़ों का न फलना-** अगर फल-फूल आएं भी, तो बहुत कम।

3- नदियों में जल की कमी।

4- **अधर्म की वृद्धि-** दूसरों को मारकर उनका धन लूट लेना, अधिकतर लड़कियों को मार कर पृथ्वी में गाड़ देना।

5- **असमानता का प्रचार-** समान भावना का समाप्त हो जाना, ऊँच-नीच छुआ-छूत आदि का प्रकोप।

6- **ईश्वर को छोड़कर अन्य की पूजा-** यद्यपि सृष्टि का नियामक एक ही परमेश्वर है, परन्तु उसको छोड़कर अन्य देवी-देवताओं की पूजा, पेड़-पौधों एवं पत्थरों को भी भगवान मानने की प्रवृत्ति।

7- **भलाई की आड़ में बुराई-** भलाई का आश्वासन देकर किसी को फँसा लेना, और उसका अनिष्ट करना। इसी को कपट कहते हैं।

8- **ईर्ष्या-द्वेष तथा बाह्य आडम्बरों का प्रसार-** लोगों में सहानुभूति का अभाव हो जाना। आपस में एक दूसरे को शत्रुता के भाव से देखना।

ईश्वर के प्रति श्रद्धा का अभाव हो जाना, वेषभूषा केवल दिखावे के ही लिए हो कि वे ईश्वर के भक्त हैं।

9- **धर्म के नाम पर अधर्म करना-** धर्म से विराग और अधर्म से अनुराग।

Scanned with CamScanner

10- **साधुओं की रक्षा करना-** अच्छे लोगों की समाज में दुर्गति देखकर उनकी रक्षा के लिए अन्तिम अवतार।

11- **ईश्वराज्ञापलन का अभाव-** लोगों में वेदों के प्रति श्रद्धाहीनता और उनकी आज्ञाओं का पालन न करना।

अन्तिम अवतार की विशेषताएं

1- **अश्वारोहण-** पुराणों में अन्तिम अवतार के विषय में जहाँ कहीं भी वर्णन हुआ है उनकी सवारी अश्व (Horse) ही बताई गई है। वह अश्व वेग से चलनेवाला होगा। अश्व के विशेषण में देवदत्त नाम आया है देवदत्त का अर्थ है- देवताओं द्वारा दिया गया।

2- **खड्गधारण-** अश्वारोहण के अतिरिक्त अन्तिम अवतार को खड्गधारी भी बताया गया है।[1] दुष्टों का संहार अन्तिम अवतार के द्वारा तलवार से है न कि एटम बम आदि से। विचारणीय है कि यह समय अणुयुग है, न कि तलवार युग। अवतार की सबसे बड़ी विशेषता है कि अपनी वेशभूषा तथा अस्त्र देश, काल और पात्र के अनुसार उसकी वेशभूषा भी रहती है।

3- **जगत्पति-** पति शब्द 'प' (रक्षा करना) धातु में 'ति' प्रत्यय के संयोग से बना है। जगत् का अर्थ संसार, अतः जगत्पति शब्द का अर्थ हुआ, संसार की रक्षा करनेवाला।

4- **असाधुदमन-** अन्तिम अवतार की सबसे प्रशंसनीय विशेषता यह है कि वह दुष्टों का ही दमन करेगा,[2] न कि अच्छे लोगों का।

---

[1]– 'अश्वामाशुगमारूह्य देवदत्तं जगत्पतिः।
असिनासाधुदमनमष्टैश्वर्यगुणान्वितः।।भागवत पु0 12-2-19
आठ ऐश्वर्यों और गुणों से युक्त जगत्पालक देवताओं द्वारा दिए गए वेगगामी अश्व पर चढ़कर तलवार से दुष्टों का दमन करेंगे।'

[2]– 3, 4 और 5वें वैशिष्ट्य की पुष्टि के लिए देखिए।
भागवतपुराण 12-2-19

Scanned with CamScanner

5- **चार भ्राताओं के सहयोग से युक्त-** 'भ्राता' शब्द का अर्थ है सहायक। अन्तिम अवतार के सहायक चार होंगे; जो हर तरह से उसे सहायता देंगे[1]।

6- **देवताओं द्वारा उसकी सहायता-** धर्म के प्रसार एवं दुष्टों का दमन करने में सहायता देने के लिए देवता भी आकाश में उतर आएँगे।

7- **कलि का निराकरण करनेवाला-** जिस अर्थ में 'कलि' शब्द प्रयुक्त होता है, उसी अर्थ में शैतान शब्द भी प्रयुक्त होता है। अन्तिम अवतार के द्वारा कलि अर्थात् शैतान की पराजय होगी।

8- **अप्रतिमद्युति-** अन्तिम अवतार के शरीर में इतनी अधिक कान्ति रहेगी, कि उसकी उपमा नहीं दी जा सकती[2], और न उनके समान कान्तिमान और कोई अवतार ही हुआ।

9- **राजाओं के वेश में छिपे हुए दस्युओं का विनाश-** अन्तिम अवतार के विषय में यह भी भागवत पुराण में है कि वह राजाओं के वेश में छिपे हुए दस्युओं का संहार करेगा।

10- **शरीर से सुगन्ध का निकलना-** अन्तिम अवतार के शरीर से सुगन्ध निकलेगी[3], जो हवा में मिलकर लोगों को मन को निर्मल करेगी।

---

[1]– 'चतुर्भिर्भ्रातृभिर्देव करिष्यामि कलिक्षयम्'
कल्किपुराण अध्याय 2, श्लोक 5
हे देव! चर सहयोगियों के साथ मैं शैतान का नाश करूँगा।

[2]– नवचरत्राशुना क्षोणयां हयेना प्रतिमद्युतिः।
नृपलिङ.च्छदो दस्यून्कोटिशोनिहन्यिति।।
भागवतपुराण 12-2-20
वेगगामी अश्व से पृथ्वी में विचरते हुए अप्रतिम कान्ति वाले वह राजाओं के वेष में छिपे करोड़ों दुष्टों का संहार करेंगे।

[3]– 'अथतेया' भविष्यन्ति मनांसि विश्वदानि वै।
वासुदेवंगरागतिपुन्यगन्धानिलस्पृशाम्।।
भागवत पुराण 12 स्कन्ध, 2 अध्याय, 21वां श्लोक

Scanned with CamScanner

11- **बहुत बड़े समाज का उपदेशक बनना-** अन्तिम अवतार बहुत बड़े समाज का कल्याणकारी होगा। धर्म से दूर अत्याचारियों का दमन करके उन्हें सीधे रास्ते पर लगाएगा।

12- **माधवमास की द्वादशी शुक्ल पक्ष को जन्म-** अन्तिम अवतार का जन्म शुक्लपक्ष की बारहवीं तिथि को माधवमास (वैशाख) में होगा। यह कल्कि पुराण से विदित है[1]।

13- **शम्भल के प्रधान पुरोहित के यहाँ जन्म-** शम्भल स्थान के प्रमुख पुरोहित विष्णुयश[2] के यहाँ जन्म होगा और माता का नाम सुमति[3] होगा। ये सभी विशेषताएँ अन्तिम अवतार में होंगी।

अन्तिम अवतार का समय

भारतीय धर्मग्रन्थों ने समय को चार भागों में विभाजित किया है।

1- **सत्ययुग-** इस युग का नाम कृतयुग है। इसकी अवधि सत्रह लाख अट्ठाइस हज़ार वर्ष है।

2- **त्रेतायुग-** सत्युग के बाद त्रेतायुग आता है। त्रेतायुग का समय बारह लाख छियानवे हज़ार वर्ष तक है।

3- **द्वापर युग-** त्रेतायुग के बाद द्वापर युग आता है, इसकी अवधि आठ लाख चौंसठ हज़ार वर्ष है।

---

[1]– द्वादश्यां शुक्लपक्षस्य माधवे मासि माधवम्ः।
जातो ददृशतुः पुत्रं पितरौ हृष्टमानसौ।।
कल्कि पुराण, द्वितीय अध्याय, 15वां श्लोक।

[2]– शम्भलग्राममुख्यस्य ब्राह्मणस्य महात्मनः।
भवने विष्णुयशसः कल्किः प्रादुर्भविष्यति।।
भागवतपुराण 12-2-18

[3]– शम्भले विष्णुयशसो गृहे प्रादुर्भवाम्यहम्।
कल्कि0 अध्याय 2, श्लोक 4
सुमत्यां विष्णुयशसा गर्भमाधत्त वैष्णवम्।
कल्कि पुराण, अध्याय 2, श्लोक 11,

Scanned with CamScanner

4- **कलियुग-** कलियुग की अवधि चार लाख बत्तीस हज़ार वर्ष है।

अवतार भविष्य में होगा परन्तु अवतार के पूर्व ही अत्याचारों से दबकर पृथ्वी जलमग्न हो जाए, तो भावी अवतार से लाभ ही क्या? गीता में भी कहा गया है, कि जब धर्म की हानि होती है और अधर्म की वृद्धि होती है, तब तब अवतार होता है। साधुओं की रक्षा के लिए तथा दुष्टों के संहार के लिए, एवं धर्म की स्थापना के लिए युग-युग में अवतार होता है[1]। अब यह देखना है, कि जिन परिस्थितियों के बाद अवतार होता है, क्या वे परिस्थितियाँ बीत चुकी या बीत रही हैं? इतना तो निश्चित ही है कि अन्तिम अवतार कलियुग में होगा, और कलियुग को आरम्भ हुए आज से पाँच हज़ार उन्हत्तर वर्ष हो गए[2] अन्तिम अवतार का समय कलियुग के प्रायः बीत जाने पर या कुछ बीत जाने पर है[3]। परिस्थिति वह रहेगी, कि केवल अपना ही पेट पालना लोगों को अभीष्ट रहेगा।

दूसरी बात ध्यान देने की यह है कि अन्तिम अवतार उस समय होगा जब कि युद्धों में तलवार का प्रयोग किया जाता हो, और सवारियों में अश्व का प्रयोग होता हो। क्योंकि भागवत पुराण में उल्लेख है, कि देवताओं द्वारा दिए गए वेगगामी अश्व पर चढ़कर आठों ऐश्वर्यों एवं गुणों से युक्त जगत्पति तलवार से दुष्टों का दमन करेंगे।[4] यह तलवारों और घोड़ों का युग नहीं है, यह तो अणुबम एवं टैंकों आदि का युग है। तलवार एवं घोड़ों का समय समाप्त हो चुका है अतः अन्तिम अवतार की स्थिति तलवारों एवं घोड़ों के युग में ही होनी सिद्ध होती है। आज से लगभग 1400 वर्ष पहले घोड़ों तथा तलवारों का प्रयोग होता था और

---

[1]– यदा याद हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थामधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।। भगवद्गीता

[2]– गतकलिः 5069 पंचागं 2025 सं0

[3]– इत्थं कलौ गतप्राये जनेषु खरधर्मीण।
धर्मत्राणाय सत्वेन भगवानवतरिष्यति।।
भागवतपुराण 12 स्कन्ध, 2 अध्याय, 17वां श्लोक।

[4]– 'अश्वमाशुगमरूह्य देवदत्त जगत्पतिः।
असिनासधुदमनमष्टैश्वगुणन्वितः।
भागवतपुराण 12 स्कन्ध, 2 अध्याय, 19वां श्लोक।

Scanned with CamScanner

उसके लगभग 100 वर्षों बाद से बारूद का निर्माण सोडा और कोयला के संयोग से अरब में होने लगा।

जन्मतिथि का भी निरूपण होना आवश्यक है। कल्किपुराण में अन्तिम अवतार का समय माधव मास, शुक्लपक्ष की द्वादशी तिथि दिया गया[1]।

स्थान निरूपण

यह तो निर्विवाद सिद्ध है कि अन्तिम अवतार का स्थान शम्भल ग्राम होगा।[2] केवल ग्राम के नाम से ही सन्तोष नहीं होता, जब तक कि उसका पूरा विवरण न हो। पहले यह निश्चय करना आवश्यक है कि शम्भल ग्राम का नाम है या किसी ग्राम का विशेषण।

शम्भल किसी ग्राम का नाम नहीं हो सकता, क्योंकि यदि केवल किसी ग्राम विशेष को शम्भल नाम दिया गया होता तो उसकी स्थिति भी बतलाई गई होती। परन्तु पुराणों में कहीं भी शम्भल ग्राम की स्थिति नहीं बतलाई गई है। भारत में खोजने पर यदि कहीं कोई शम्भल नामक ग्राम मिलता है, तो वहाँ आज से लगभग चौदह सौ वर्ष पहले कोई पुरुष ऐसा नहीं पैदा हुआ जो लोगों का उद्धारक हो। फिर अन्तिम अवतार कोई खेल तो नहीं है कि अवतार हो जाए और समाज में ज़रा सा परिवर्तन भी न हो, अतः शम्भल शब्द को विशेषण मान कर उसकी व्युत्पत्ति पर विचार करना आवश्यक है।

1- 'शम्भल' शब्द 'शम्' (शान्त करना) धातु से बना है। अर्थात् जिस स्थान में शान्त मिले।

2- सम् उपसर्गपूर्वक 'वृ' में आप् प्रत्यय के संयोग से निष्पन्न शब्द 'संवर' हुआ। 'वबयोरभेदः' और 'रतयोरभेदः' के सिद्धान्त से शम्भल

---

[1]– द्वादश्यां शुक्ल पक्षस्य, माधवे मासि माधवम्।
जातं....।। कल्कि पुराण, अध्याय 2, श्लोक 15।

[2]– शम्भले विष्णुयशसो गृहे प्रादुर्भवाळयहम्।
कल्कि पुराण, अध्याय 2, श्लोक 4।

Scanned with CamScanner

शब्द की निष्पत्ति हुई, जिसका अर्थ हुआ जो अपनी ओर लोगों को खींचता है या जिसके द्वारा किसी को चुना जाता है।

3- 'शम्भर' शब्द की निघण्टु (1/12/88) में उदकनामों में पाठ है। 'र' और 'ल' में अभेद होने का कारण शम्भल का अर्थ होगा जल का समीपवर्ती स्थान।

लोगों को यह सन्देह होगा कि जब 'शम्भल' का अर्थ जल निकल रहा है, तो जल का समीपवर्ती स्थान या गाँव अर्थ क्यों लिया गया? इसके उत्तर में उतना ही बतला रहा हूँ कि प्रसंग यहाँ ग्राम का है न कि जल का। जब गंगा में घोष शब्द से आप यह अर्थ करते हैं कि गंगा के समीप स्थित गांव में घोष, न कि गंगा के जल के ऊपर घोष, तो आप शम्भल शब्द से वैसे ही क्यों अर्थ नहीं निकाल लेते? यदि गंगा में घोष वाक्य में लक्षण मानते हैं, तो यहाँ भी लक्षण मानिए।

अन्तिम अवतार के स्थान के विषय में केवल इतना ही विचारणीय है कि वह स्थान, जिसके आस-पास जल हो और वह स्थान आकर्षण एवं शान्तिदायक हो। अवतार की भूमि पवित्र होती है, अतः स्थान में भी पवित्रता होनी चाहिए और हिंसा आदि नहीं होनी चाहिए। साथ ही साथ वह स्थान एक तीर्थ होना चाहिए अर्थात् लोगों का धार्मिक स्थान हो।

'शम्भल' का शाब्दिक अर्थ है- 'शान्ति का स्थान' अन्तिम अवतार का स्थान शान्तिदायक, हिंसा और द्वेष से रहित होना चाहिए।

अन्तिम अवतार के लिए आवश्यक नहीं कि वह भारत में ही हो और संस्कृत या हिन्दी ही बोले। भाषा, वेशभूषा तो केवल देश-काल पात्र के अनुसार होती है। यदि अवतारों के लिए एक ही प्रकार की भाषा, वेशभूषा तथा एक ही भाषा के नाम प्रयुक्त होते तो सभी देशों के अन्दर होनेवाले अवतारों की भाषा तथा वेशभूषा एक ही होती। यह कहना अज्ञानता है, कि अवतार केवल भारत में ही हो। क्या भारत ही ईश्वर का प्रिय स्थान है, और अन्य देश नहीं अथवा क्या सृष्टि केवल भारत ही है और दूसरे देश नहीं।

Scanned with CamScanner

अतः अन्तिम अवतार भारत से बाहर भी हो सकता है और वहाँ उस देश की भाषा, रीति-रिवाज तथा वेषभूषा के अनुरूप उसको चलना होगा, परन्तु अधर्म एवं अन्याय के विरुद्ध।

समय को दृष्टि में रखते हुए इतना तो स्पष्ट ही है, कि भारत में आज से लगभग तेरह-चौदह सौ वर्ष पूर्व कोई ऐसा व्यक्ति नहीं हुआ, जो अन्तिम अवतार की कसौटी पर खरा उतरे।

जितने भी पुराण हैं, कल्कि के अवतार के विषय में सभी स्थान को 'शम्भल' बतलाते हैं। 'सम्भल' या 'शम्भल' शब्द एक ही है। अन्तिम अवतार ही सिद्धि प्रकरण के स्थान आदि का निर्धारण किया जाएगा।

संसार के सामाजिक और धार्मिक पतन का काल

प्रत्येक महापुरुष के जन्म के पहले काफ़ी संकटों की परिस्थिति आती है या यों कहिए कि प्रत्येक कष्टमय दशाओं के बाद ही ईश्वर किसी महांपुरुष को भेजता है। भारत की भी दशा आज से लगभग दो हज़ार वर्ष पहले ख़राब थी। प्राचीन भारत के इतिहास में सबसे अधिक अन्धकार और अत्याचारों का वह युग है जो लगभग पाँच सौ ई0 से प्रारम्भ होता है। वैदिक काल में मूर्तिपूजा का अभाव था, परन्तु इस समय मन्दिरों में मूर्तिपूजा का सर्वत्र प्रचलन और स्थापन हो गया था[1]। मन्दिरों के पुजारी तरह-तरह की त्रुटियों का उद्गम बने, जो धार्मिक आडम्बरों से भोले-भाले यात्रियों को लूटते थे[2]।

वैदिक काल में सारी हिन्दू जाति में एकता तथा समानता का व्यवहार होता था, लेकिन अब जाति-पाँति के कारण अन्तरंग भेद-भाव का बोलबाला हो गया है। वैदिक काल की वर्ण-व्यवस्था, जो स्वेच्छया

---

[1]– A History of Civilisation in Ancient India, Vol. 3, Page 281

[2]– A History of Civilisation in Ancient India, Vol. 3, Page 243

नोटः- 'वाचस्पत्यम्' के अनुसार शम्भल में 60 तीर्थ हैं। वहाँ पर लात-मनात नामक तीर्थ की भी स्थिति कुछ विद्वानों ने बतलाई है। लात, मनात तथा कनात आदि 60 प्रसिद्ध मूर्तियों की प्राप्ति का स्थान शम्भल है। ऐसा मुसलमान विद्वान मानते हैं। मुसलमान विद्वान 'दारुल-अमन' को ही शम्भल कहते हैं।

Scanned with CamScanner

अपनाने पर थी, अब जाति-व्यवस्था बन गई थी। इससे सामाजिक संगठन पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा[1]। स्त्रियों को दास्ता का पद प्रदान किया गया[2]। विधान इस प्रकार का बना जो प्रत्यक्ष रूप में पक्षपातकर था। ब्राह्मण चाहे कितना ही अत्याचार क्यों न करे, मृत्यु-दण्ड का भागी कभी नहीं होता था। निम्न जाति द्वारा उच्च वर्ग की पत्नी से व्यभिचार मृत्यु दण्ड को दिलाता था, तथा उच्च जाति द्वारा निम्न जाति की पत्नी के साथ व्यभिचार करने पर कुछ अर्थदण्ड दिया जाता था। यदि निम्न जाति का पुरुष उच्च जाति के पुरुषों को उपदेश दे, तो गरम तेल उसके मुख में छोड़ने का विधान था, गाली देने पर जीभ काटने का विधान था[3]। शराब पीना राजाओं के महत्व की बात थी, और राजमहिषी भी शराब के नशे में मदमस्त झूमती थी[4]। मार्गों पर व्यभिचारियों का जमघट लगा रहता था[5]। ईश्वर की खोज जंगलों और पहाड़ों में की जाती थी। काल्पिनिक और मनगढ़न्त विचारों का एवं भूत-प्रेतों की पूजा का धर्म था।

सम्भवतः इतनी बुरी अवस्था रोमन और पर्सियन साम्राज्य की पहले कभी नहीं थी, जितनी सातवीं शताब्दी के प्रारम्भ में हुई। बाईज़ेंटियन साम्राज्य के क्षीण हो जाने से सम्पूर्ण शासन भ्रष्ट हो चुका था और पादरियों के दुष्कर्मों और दुष्टताओं का परिणाम यह हुआ कि ईसाई धर्म बहुत गिर गया, और इतनी ख़राब परिस्थिति हो गई की आज उसकी वैसी कल्पना नहीं की जा सकती। उन बुरी परिस्थितियों को यदि आज स्पष्ट किया जाए, तो शायद कोई उसपर विश्वास न करे। यद्यपि उन बुराइयों का ऐसा प्रबल प्रमाण है, कि सन्देह लेशमात्र भी नहीं रह

1– A History of Civilisation in Ancient India, R.C. Dutt. Vol 3, Page 308

2– A History of Civilisation in Ancient india, R.C. Dutt. Vol 3, Page 331

3- A Histroy of Civilisation in Ancient India, R.C. Dutt. Vol 3, Page 342-343.

4- A History of Civilisation in Ancient India, R.C. Dutt. Vol 3, Page 469.

5- A History of Civilisation in Ancient India, R.C. Dutt. Vol 3, Page 469.

Scanned with CamScanner

सकता। पारस्परिक संघर्षों और शत्रुता के कारण समाज मार्ग को भूल चुका था। शहरों और क़स्बों में रक्त की धारा बहती थी। ईसा मसीह ने सच ही कहा था, कि मैं शान्ति नहीं लाया हूँ, अपितु तलवार लाया हूँ।[1] इस समय अरब के एक भाग में मुहम्मद साहब का धर्म उठा, जो रोमन साम्राज्य के संघर्षों से दूर था। इस धर्म के भाग्य में यही लिखा था कि यह तूफ़ान की तरह से सम्पूर्ण पृथ्वी में छा जाएगा और अपने समक्ष बहुत से साम्राज्यों शासकों और प्रथाओं को इस तरह उड़ा देगा, जैसे कि आँधी मिट्ठी को उड़ा देती है[2]।

अन्य ऐतिहासिक प्रमाणों से यह भी सिद्ध है कि मुहम्मद साहब के जन्म से पहले ईसाइयों में कितनी बुराइयाँ फैल गईं थीं[3]। इसी प्रकार सेल ने क़ुरआन के अनुवाद की प्रस्तावना में लिखा है : गिरजाघर के पादरियों ने धर्म के टुकड़े-टुकड़े कर डाले थे, और शांति प्रेम एवं अच्छाइयाँ उनमें से दूर हो गई थीं। वे 'मूल धर्म' को भूल गए थे। धर्म के विषय में अपने तरह-तरह के विचार बनाए हुए परस्पर कलह करते

1- Perhaps in no previous period had the empire of the Persian of the oriental part of Roman empire, been in a more deplorable or unhappy state than at the beginning of the 7th century. In consequence of the weadness of the Byzantinc despots the whole frame of their government was in a state of complete dis-organization of the most frightful abuses and corruption of the priests, the Christian religion had fallen into a state of degradation scarcely at this day concievably and such as would be absolutely incredible had we not evidence of it the most unquestionable, The feuds and animosities of the almost innumerable sects had risen to the greatest possible heights; the whole frame of Society was loosened; the towns and cities flowed with blood. Well, indeed, had jesus prophesied when he said he brought not peace, but a sword.

'Apology for Mohamed' by Godfrey Higgins, Page 1.

2- "At this time, in a remote and almost unkown colner f Arabia, at a distance from ciril broils which were tearing to piecs of Roman empire, arose the reigion of Mohammad, a religion destined to sweep like a tornado over face of the earth to carry before it empires, Kingdoms and systems, and to scatter them like dust before the wind"

'Apology for Mohammed' by Godfrey Higgins, Page 2.

3- Translation of Holy Quraan by George Sale. First translation/ Preface on pages 25/26

Scanned with CamScanner

रहते थे। इसी पृथ्वी में रोमन गिरिजाघरों में बहुत सी भ्रम की बातें धर्म के रूप में मानी जाने लगी और मूर्तिपूजा बहुत ही निर्लज्जता से की जाने लगी[1]।

मुहम्मद साहब से पहले ईसाई धर्म और मूर्तिपूजा दोनों ने मिलकर एक नवीन रूप धारण कर लिया, जिसके कारण ईसाइयों में मूर्तिपूजा सामान्य हो गई, और एक ईश्वर के स्थान पर तीन ईश्वर माननीय हो गए और मरियम (ईसा मसीह का माँ) को ईश्वर की माँ समझा जाने लगा।

अन्तिम अवतार सिद्धि

उपर्युक्त विवरणों में यह तो स्पष्ट ही किया जा चुका है, कि कल्कि अश्वारोही तथा खड्गधारी होगा। तलवार एवं अश्व का समय बीत चुका है, और अब तो जेट विमानों एवं अणुअस्त्रों का युग आ गया है। अन्तिम अवतार का काल निर्धारण आज से पूर्व ही सिद्ध होता है। अन्तिम अवतार के पूर्व की परिस्थितियाँ भी सिद्ध हो चुकी हैं, कि धर्म की हानि और अधर्म एवं अत्याचारों की वृद्धि होने पर अन्तिम अवतार की प्रक्रिया होगी। अब हम कल्कि अवतार और मुहम्मद साहब का तुलनात्मक अध्ययन उपस्थित करते हैं।

1- **अश्वारोहण एवं खड्गधारण-** भागवतपुराण, द्वादश स्कन्ध द्वितीय अध्याय के उन्नीसवें श्लोक से कल्कि का देवताओं द्वारा दिए गए अश्व पर चढ़ना एवं तलवार द्वारा दुष्टों का संहार करना उल्लिखित है[2]। कल्कि का घोड़ा जो देवताओं द्वारा उन्हें दिया जाएगा वह बहुत उत्तम रहेगा, उसी पर चढ़-कर वह दुष्टों का संहार करेंगे। मुहम्मद साहब को भी फ़रिश्तों द्वारा घोड़ा मिला था, जिसका नाम बुर्राक था[3], उसपर

1- The History of Struggle between Science and religion. by Draper (Noted from Siratun Nabi, Vol. IV, Page 227)

2- 'अश्वमाशुगारूढ़ा देवदत्तं जगत्पतिः
असिनासाधुदमनमष्टैश्वर्यगुणान्वितः।।
भागवत पुराण, द्वादश स्कन्ध द्वितीय अध्याय, 19वां श्लोक।'

3- The Picture of Burak was published in organiser, February 8, 1969

Scanned with CamScanner

बैठकर मुहम्मद साहब ने रात्रि को तीर्थयात्रा की थी[1]। मुहम्मद साहब को घोड़े अधिक प्रिय थे। और उनके सात घोड़े थे[2]। अनस ने कहा है कि मैंने मुहम्मद साहब को देखा कि घोड़े पर सवार थे और गले पर तलवार लटकाए हुए थे[3]। मुहम्मद साहब के पास नौ तलवारें थीं।

1- कुल परम्परा से प्राप्त

2- जुलफ़िक़ार नामक तलवार

3- कलई नामवाली तलवार[4]

2- **जगद्गुरू-** भागवतपुराण में अन्तिम अवतार को जगत्पति कहा गया है[5]। जगत् का अर्थ है संसार और पति का अर्थ है रक्षक। जगत्पति शब्द का अर्थ हुआ कि अपने उपदेशों द्वारा गिरते हुए समाज को बचाने वाला। वह समाज कोई सीमित समाज तो है नहीं, वह समाज है संसार। तात्पर्य यह हुआ कि जगद् का गुरू। मुहम्मद साहब के लिए भी क़ुरान में कहा गया है, **"कहो : ऐ लोगो निस्सन्देह मैं तुम सबकी तरफ़ अल्लाह का रसूल हूँ।[6]"**

दूसरी जगह यह भी कहा गया है कि पवित्र है वह अस्तित्व, जिसने अपने भक्त पर पवित्र ग्रन्थ उतारा, ताकि सम्पूर्ण संसार के लिए वह पापों का डर दिखानेवाला हो[7]।

इस प्रकार जगद् गुरुत्व का अस्तित्व एवं महत्व दोनों ही सिद्ध होते हैं।

1- "He explained to Ommehani, daughter of Abu Talib that during the night he had performed his devotions in the temple of Jerusalem. He was going forth to make his vision known, when she confijured him not this to expose himself of the derision of the unbelievers".
Life of Mohammad, by Sir William Muir, page 125.

2- Asah us-siyar page, 565, Jamaul Favaid, vol 2, page 179

3- बुख़ारी की हदीस

4- असहुस्सियर, पेज 596

5- भागवतपुराण, द्वादश स्कन्ध
तृतीय अध्याय, 19वां श्लोक

6- क़ुरआन, सूरः फ़ुरक़ान, आयत नं.1

7- क़ुरआन, सूरः अअ्राफ़, आयत नं0 158

Scanned with CamScanner

3- असाधुदमन- कल्कि के विषय में उल्लेख है कि वह दुष्टों का दमन करेंगे।

यही बात मुहम्मद साहब पर भी घटित होती है। उन्होंने भी दमन किया, तो दुष्टों का ही। क़ुरआन में भी यह कहा गया है, कि जिनको सताया गया है, उनको आज्ञा दी जाती है कि वे भी लड़ें, इस कारण से कि उनपर अत्याचार किया गया है, और परमेश्वर उनकी सहायता पर पूरी शक्ति रखता है। जो लोग अपने घरों से निकाले गए, केवल इस बात पर कि वे कहते हैं कि ईश्वर उनका पालक है। मुहम्मद साहब ने लुटेरों और डाकुओं को सुधार कर उन्हें एकेश्वरवाद की शिक्षा दी, तथा ईश्वर की पूजा में देवताओं के मिश्रण का विरोध किया तथा मूर्तिपूजा का भी खण्डन किया। उन्होंने जिस धर्म की स्थापना की, उसके विषय में कहा कि मैं प्राचीन धर्म को ही स्थापित कर रहा हूँ। कोई यह नया धर्म नहीं। 'इस्लाम' शब्द का अर्थ है, ईश्वर की आज्ञा का पालन करानेवाला धर्म और वेद शब्द भी ईश्वरीय वाणी है और उसकी आज्ञा पालन करानेवाला धर्म वैदिक है। अतः वैदिक धर्म और इस्लाम धर्म में साम्य है। जो वैदिक या इस्लाम धर्म के मार्ग में बाधक है, उन्हें नास्तिक या काफ़िर कहा जाता है, उनसे विरोध की बात और उनके दमन की बात स्वाभाविक ही है।

जिस परिस्थिति में मोहम्मद साहब का जन्म हुआ, वह परिस्थिति डाकुओं और दुष्टों से युक्त थी। लड़कियों को क़त्ल कर दिया जाता था।

उनके जन्म के पहले ईरान में तो कुबाद प्रथम बादशाह हुआ था, जो भज्दक के उपदेश से प्रभावित होकर यह घोषित कर चुका था[1] कि धन और औरत सभी की है, उनपर किसी व्यक्ति विशेष का अधिकार नहीं। इसी के परिणाम स्वरूप व्यभिचार अपनी सीमा को पार कर चुका था। बाद में मुहम्मद साहब ही ऐसे व्यक्ति हुए जिनके वर्ग ने उन आतताइयों को पराजित करके धर्म की मर्यादा स्थापित करने में सफलता प्राप्त की।

---

[1]– सीरतुन्नबी, वाल्यूम 4, पेज 215

Scanned with CamScanner

4- स्थान सम्बन्धी साम्यः कल्कि का स्थान शम्भल होगा और वह वहाँ के पुरोहित के यहाँ जन्म लेंगे[1]। पुरोहित का नाम विष्णुयश होगा। इतना तो ज्ञात ही है कि उक्त नाम संस्कृत भाषा के हैं, जो या तो अर्थ को निर्धारित करके लिखे गए हैं, या तो उन नामों का विकृत रूप अरबी भाषा में हो गया है।

संस्कृत प्रायः अर्थप्रधान नामों को महत्व देती है, अतएव उन नामों के अर्थ को ही स्वीकार करना अधिक उपयुक्त है।

'शम्भल' शब्द 'शान्त' करना अर्थ वाली 'शम' धातु से बना हुआ है, जिसमें 'बन' प्रत्यय लगा हुआ है। शम्भल शब्द का अर्थ होगा 'शान्ति का घर' और मक्का को अरबी भाषा में 'दारुलअमन' भी कहा जाता है, जिसका अर्थ शान्ति का घर है।

5- प्रधान पुरोहित के यहाँ जन्म- कल्कि के विषय में यह कहा गया है कि वह प्रधान पुरोहित के यहाँ जन्म लेंगे। मुहम्मद साहब ने भी मक्का में काबा के प्रधान पुरोहित के यहाँ जन्म लिया।

6- माता-पिता सम्बन्धी साम्य- कल्कि की माता का नाम कल्कि पुराण में सुमति (सोमवती) आया हुआ है जिसका अर्थ है, शांति एवं मननशील स्वभाव वाली। पिता का नाम विष्णुयश आया हुआ है, जो बहुत ही पवित्र तथा ईश्वर का उपासक होगा, मुहम्मद साहब की माता का भी नाम 'आमिना' था जिसका अर्थ होता है, शान्ति (अमन) वाली, तथा पिता का नाम "अब्दुल्लाह" था। अब्दुल्लाह का अर्थ है अल्लाह अर्थात विष्णु का बन्दा[2]।

---

[1]– 'शम्भलग्राममुख्यस्य ब्राह्मण महात्मनः।
भवने विष्णुयशसः कल्किः प्रादुर्भीविष्यति।।
भागवतपुराण, द्वादश स्कन्ध, 2 अध्याय, 18वां श्लोक'

[2]– कल्कि अवतार के पिता का नाम विष्णुयश होगा, विष्णु- अल्लाह यश- बन्दा यानी अब्दुल्लाह, कल्कि अवतार की माता का नाम सुमति (सोमवती) होगा। सोमवती- अमन व सलामती वाली यानी आमिना। इसका पिता इसकी पैदाइश से पहले फ़ौत हो जाएगा और बाद में माता भी फ़ौत हो जाएगी तारीख़ ने इसकी ताईद की (सरवरे आलम, 10-11)

Scanned with CamScanner

7- अन्तिम अवतार की धारणा में साम्य- कल्कि को अन्तिम युग का अन्तिम अवतार बताया है[1], मोहम्मद साहब ने भी घोषणा की है कि मैं अन्तिम सन्देष्टा हूँ। यही कारण है कि मुसलमान भावी किसी सन्देष्टा या अवतार को नहीं मानते।

'कल्कि' शब्द का अर्थ 'वाचस्पत्यम्' तथा 'शब्दकल्पतरु' में अनार का फल खानेवाले तथा कलंक को धोनेवाले किया गया है। मुहम्मद सहाब भी अनार और खजूर का फल खाते थे, तथा उन्होंने प्राचीन काल से आगत मिश्रण (शिर्क) और नास्तिकता (कुफ्र) को धो दिया।

8- उत्तरदिशिगमन तथा उपदेश सम्बन्धी साम्य- कल्कि पुराण में उल्लिखित है, कि[2] कल्कि पैदा होने के बाद पहाड़ी की तरफ चले जाएंगे और वहाँ परशुराम जी से ज्ञान प्राप्त करेंगे. बाद में उत्तर की तरफ़ जाकर फिर लौटेंगे। मुहम्मद साहब भी जन्म लेने के कुछ समय बाद पहाड़ियों की तरफ़ चले गए और वहाँ जिब्रील द्वारा ज्ञान प्राप्त किया, अर्थात उनपर क़ुरआन की आयतों का उतरना शुरू हुआ। उसके बाद वे उत्तर मदीने जाकर वहाँ से फिर दक्षिण की ओर लौट आए, अपने स्थान को विजित किया[3], यही घटना कल्कि के विषय में भी घटने की पुराणों द्वारा घोषणा है।

9- शिव द्वारा कल्कि को एक घोड़ा दिया जाना[4] शिव कल्कि को एक घोड़ा देंगे जो बहुत ही चमत्कारों से युक्त होगा। मुहम्मद साहब को भी बुर्राक़ नाम का चमत्कारी घोड़ा मिला था, जो ईश्वर से उन्हें प्राप्त हुआ था।

---

[1]– भागवतपुरण के 24 अवतारों के प्रकरण में कल्कि सबसे अन्तिम अवतार है। भागवतपुराण प्रथम स्कन्ध, तृतीय अध्याय, 25वां श्लोक।

[2]– सरवरे आलम, पेज 10

[3]– परशुराम कल्कि अवतार को गुफा में ले जाकर तालीम देंगे,
परशुराम-जिब्रील, या रूहुलक़ुदुस। गुफा-ग़ार यानी गारेहिरा का वाक़िया (सरवरे आलम, पेज 11)

[4]– शिव कल्कि अवतार को एक घोड़ा देंगे जो अजीबो ग़रीब सिफ़त रखता होगा। शिव यानि ख़ुदा और घोड़े का इशारा बुर्राक़ की तरफ़ है। (सरवरे आलम, पेज 11)

Scanned with CamScanner

10— **चार भाइयों के साथ कल्कि का निवारण-** कल्कि पुराण में उल्लेख है कि[1] चार भाइयों के साथ कलि (शैतान) का निवारण करेंगे।

मोहम्मद साहब ने भी चार साथियों के साथ शैतान का निवारण किया था।

ये चार साथी थे[2]। 1- अबूबक्र, 2-उमर, 3-उस्मान और 4- अली। बाद में ये ही ख़लीफ़ा हुए जिन्होंने मुहम्मद साहब के एकेश्वरवाद और आडम्बर विहीन धर्म का प्रचार किया।

11- **देवताओं द्वारा सहायता-** कल्कि पुराण में उल्लेख है, कि देवताओं द्वारा कल्कि को युद्धों में सहायता मिलेगी[3]। यही बात मुहम्मद साहब के भी विषय में हुई कि बद्र की लड़ाई में फ़रिश्ते उनकी सहायता के लिए उतरे। क़ुरआन में लिखा है कि "अल्लाह ने तुमको बद्र की लड़ाई में मदद दी और तुम बहुत कम तादाद (संख्या) में थे, तो तुमको चाहिए कि तुम अल्लाह ही से डरो और उसी के शुक्रगुज़ार होओ। जब तुम मोमिनीन से कह रहे थे कि क्या तुम्हारे लिए काफ़ी नहीं है, कि तुम्हारा रब तुमको तीन हज़ार फ़रिश्ते भेजकर मदद करे, बल्कि अगर तुम सब्र करो और अल्लाह से डरते रहो तो अल्लाह तुम्हारी मदद पाँच हज़ार फ़रिश्तों से करेगा[4] जब तुमने अपने रब से मदद माँगी, तो तुम्हारे रब ने मनज़ूर किया कि मैं तुम्हारे लिए एक हज़ार फ़रिश्ते मदद को भेजूँगा।[5]

ऐ ईमान वालो, अल्लाह की उस कृपा का स्मरण करो, जब तुम्हारे विरुद्ध सेनाएं आई तो हमने उनके विरुद्ध पवन और ऐसी सेनाएं भेजीं

---

[1]— चतुर्भिर्भ्रातृभिर्देव करिष्यामि कलिक्षयम्
कल्कि पुराण, अध्याय 2, श्लोक 5।

[2]- 632 A.D. to 661. AD the Orthodox caliphate including the first four Calibhs. Encyclopedia of World History. by W.L. Langer page 184

[3]— यात यूयं भुवं देवाः स्वांशावतरणे रतः।
कल्कि पुराण, अध्याय 2, श्लोक 7/1

[4]— क़ुरआन, सूरः आले-इमरान आयत नं0 123, 124, 125

[5]— क़ुरआन, सूरः अनफ़ाल आयत नं0 9

Scanned with CamScanner

जिनको तुम नहीं देखते थे, और जो कुछ तुम कर रहे थे, वह अल्लाह देख रहा था[1]।

12- **अनुपमकान्ति से युक्त-** कल्कि से विषय में उल्लेख है कि वे अनुपम कान्ति से युक्त होंगे, अर्थात् वे इतने अधिक सुन्दर होंगे कि उनकी उपमा नहीं दी जा सकती। मुहम्मद साहब के भी विषय में कहा गया है कि मुहम्मद साहब सभी आदमियों से अधिक सुन्दर थे और सभी मनुष्यों में अधिक आदर्शवान् एवं योद्धा थे।

13- **जन्मतिथि सम्बन्धी साम्य-** कल्कि पुराण में कल्कि के जन्म की तिथि के सम्बन्ध में लिखा है कि माधव मास में शुक्लपक्ष द्वादशी को जन्म होगा और मुहम्मद साहब का जन्म भी बारह रबीउल-अव्वल को हुआ था। बारह रबीउल अव्वल का अर्थ है, चाँद की बारहवीं तिथि अर्थात शुल्कपक्ष द्वादशी।

14- **शरीर से सुगन्ध का निकलना-** श्री मद्भागवत पुराण के अनुसार कल्कि के शरीर से निकली सुगन्ध से लोगों के मन निर्मल हो जाएंगे। उनके शरीर की सुगन्ध हवा में मिलकर लोगों के मन को निर्मल करेगी।

मुहम्मद साहब के शरीर की खुशबू तो प्रसिद्ध ही है। मुहम्मद साहब जिससे हाथ मिलाते थे, उसके हाथ से दिन भर सुगन्ध आती रहती थी। मुहम्मद साहब के नौकर ने कहा था कि मुहम्मद साहब के शरीर की सुगन्ध वायु को सुगन्धित कर देती थी, जब वह घर से बाहर निकलते थे।

एक बार उम्मेसुलैमान ने मुहम्मद साहब के शरीर का पसीना इकट्ठा किया। मुहम्मद साहब के पूछने पर उसने बताया कि इसे हम खुशबुओं में मिलाते हैं, क्योंकि यह सभी सुगन्धों से बढ़कर है।

15- **अष्टेश्वर्यगुणान्वित-** भागवत पुराण 12 स्कन्ध द्वितीय अध्याय में कल्कि को 'अष्टेश्वर्यगुणान्वित ' (आठ ईश्वरीय गुणों से युक्त) कहा

---

[1]– कुरआन, सूरः अहज़ाब, आयत नं0 9

Scanned with CamScanner

गया है। वे आठ ईश्वरीय गुण है– प्रज्ञा, कुलीनता, इन्द्रिय-दमन, श्रुतिज्ञान, पराक्रम, थोड़ा बोलना, दान और कृतज्ञता।

(क) **प्रज्ञा-** ऊँचा ज्ञान विषयक साम्य भी मुहम्मद साहब से है। भूत, भविष्य और वर्तमान की सभी बातें बताने में मुहम्मद साहब पूर्ण समर्थ थे, इस बात के समर्थन में अनेकों उदाहरण मुहम्मद इनायत अहमद की 'अलकलामुलमुबीन' पुस्तक में मिल जाएंगे। प्रमाण रूप में उस पुस्तक में इतिहास संक्षेप में यह है। रोमियों और ईरानियों की लड़ाई में रोमी जब परास्त हुए, तो मुहमम्मद साहब ने अपनी परोक्षदर्शिता से इस घटना को अपने मित्रों से बताया। उनके मित्रों से इस घटना को जानकर क़ुरैशी (विरोधी) बहुत प्रसन्न हुए परन्तु एक फ़रिश्ते से 9 वर्ष के अन्दर रूमियों की होनेवाली विजय की भविष्य वाणी को सुनकर मुहम्मद साहब के मित्र अबूबक्र से एक दो हज़ार ऊँटों के हार जाने की शर्त रखी, अन्त में 9 वर्षों के अन्दर नैनवा के युद्ध में रूमियों की विजय 627 ई0 में हुई इसी विषय से सम्बन्धित सूरः रूम नामक क़ुरान की 30वीं सूरः उतरी है– इसी प्रकार के अनेकों उदाहरण जो उनकी दूरदर्शिता से सम्बन्धित है, इतिहास से ज्ञात हैं।

(ख) **कुलीनता-** कल्कि मुख्य ब्राह्मण के परिवार से सम्वद्ध होंगे इसकी पुष्टि ऊपर हम कर चुके हैं। मुहम्मद साहब भी ऊँचे पुरोहित परिवार में पैदा हुए थे। उनका परिवार पवित्र काबा का संरक्षक था[1]। मुहम्मद साहब का जन्म 579 ई0 में क़ुरैशी की पंक्ति में हाशिम के परिवार में हुआ था, जो अरब के निवासियों द्वारा माननीय तथा काबा का परम्परागत संरक्षक था[2]।

1- He was born in A.D. 571 and came of the noble tribe of the Koreysh, who had long been guardians of the sacred Kaaba. Page-XXVI of introduction the speeches of Mohammad, by Lane-Poole, Published by Macmillan and Co. (London)

2- He sprung from toe trible of Koreysh and the family of Hashem. The most illustrious of the Arabs, the princes of Macca and the hereditary Guardians of the Caaba.
Page- 229, Vol 5, Decline and fall of the Roman Empire, by Edward Nibbon Published from E.P. Euttou and Co. Newyork. 1910 A.D.

Scanned with CamScanner

(ग) **इन्द्रियदमन-** आठ ईश्वरीय गुणों में तीसरा गुण है- इन्द्रियों को वश में करना। भारतीय धर्म ग्रन्थों में कल्कि के विषय में कहा गया है कि कल्कि इन्द्रिय दमन करनेवाले होंगे। मुहम्मद साहब के विषय में कहा गया है कि वह आत्मप्रशंसा से हीन, दयालु, शान्त, अति इन्द्रियजित और उदार होंगे[1]। 'इन्द्रियदमन' का अर्थ है, इन्द्रियों को वंश में करना। इन्द्रियाँ मन के अधीन होकर काम करती हैं अतएव मन को वश में करना ही इन्द्रियों को वश में करना है। यदि कोई यह आपत्ति करे, कि जो पुरुष 9 विवाह करे, उसको घोर कामी या भोग विलासी छोड़कर इन्द्रियों को वश में करनेवाला कैसे कहा जा सकता है? तो उन्हें यह ज्ञात होना चाहिए कि योगराज श्री कृष्ण की पटरानियाँ क्या संख्या में छः से अधिक नहीं थीं? योगी तो सांसारिक भोग विलासों के अन्तर्गगत रहकर भी निष्काम भावना के कारण मुक्त हो जाता है। जैसे कमल का पत्ता जल में रहते हुए भी जल से परे रहता है, वैसे ही योगी पुरुष (ईश्वर को प्राप्त करनेवाला) का संसार के भोगों द्वारा 9 पत्नियों का रखा जाना लोकोत्तर पुरुषत्व का ही द्योतक है, न कि इससे इन्द्रियदमनकारी होने में कोई कमी आती है।

(घ) श्रुतं-श्रुतं आठ ईश्वरीय गुणों में चौथा गुण है। श्रुतं का अर्थ है, ईश्वर द्वारा सुनाया गया और ऋषियों या पैग़म्बरों द्वारा सुना गया हो। श्रुतं शब्द श्रु (सुनना) धातु से बना है। ईश्वरीय ज्ञान जिस ग्रन्थ में हो, उसे श्रुतं कहा जाता है। मुहम्मद साहब पर फ़रिश्ते द्वारा ईश्वरीय ज्ञान उतारा जाता था, जिसे वह्य भी कहा जाता है। लेनपूल इस बात का समर्थन करते हैं कि मुहम्मद साहब पर देवदूत की सहायता से ईश्वरीय वाणी का भेजा जाना निस्सन्देह सत्य है[2] आर0 वी0 स्मिथ भी

1- Modesty and Kindness, Patience, self denial, and reveted the affection off all around him.
Page 525, Life of Mohamet by Sir William Muir
Pbulished by Smith Elder and Co. (London) 1877 A.D.

2- These are the first revelation, that came to Mohammad. That he believed, he heard them, spokent by an angles from heven Is beyond doubt.
Page xxxi, introduction, speeches of mohammad, by Lane-people.

Scanned with CamScanner

इस बात में सहमत है, कि एक वह्य में मुहम्मद साहब सन्देष्टा का पद पानेवाले घोषित किए गए है[1]।

सर विलियम म्योर ने भी मुहम्मद साहब के विषय में लिखा है कि वह सन्देष्टा तथा ईश्वर के प्रतिनिधि थे[2]। इस प्रकार मुहम्मद साहब और कल्कि अवतार की समानता दृष्टिगोचर होती है।

(ड) पराक्रम- अष्टगुणों में पराक्रम पांचवां गुण है। शारीरिक शक्ति में मुहम्मद साहब काफ़ी बढ़े हुए थे। इसके उदाहरण के रूप में एक पहलवान जिसका नाम रकाना था, का वृतान्त उपस्थित किया जा रहा है। किसी गुफा में अकेले उपस्थित रकाना पहलवान, जो क़ुरैश से सम्बन्धित था, से मुहम्मद साहब ने ईश्वर से न डरने और ईश्वर पर विश्वास न करने का कारण पूछा जिसपर पहलवान ने सत्य की स्पष्टता के लिए कहा। तब मुहम्मद साहब ने कहा, कि तू बड़ा वीर है, यदि कुश्ती में मैं तुझे नीचा दिखाऊँ, तो क्या विश्वास करेगा? उसने स्वीकारात्मक उत्तर दिया, तब मुहम्मद साहब ने उसे दो बार परास्त किया, फिर भी उस पहलवान ने मोहम्मद साहब को पैग़म्बर न माना, तथा ईश्वर की सत्यता पर विश्वास न किया[3]।

(च) अबहुभाषिता- 'अबहुभाषिता' का अथ है- थोड़ा बोलना। थोड़ा बोलना महान् पुरुष का बहुत बड़ा गुण माना जाता है। मुहम्मद साहब भी अधिकतर मौन रहा करते थे, परन्तु जो कुछ बोलते थे वह

1- Upon this, Mohammad felt the heavenly inspiration, and read he believed,the deers of God, which he after promulgated in Koran. Then came the announcement, O, Mohammed, of a truth thou art the prophet of God and I am his angle Gabriel this was the Crisis of Mohammed's Life. It was his call to renounce and to take the office of prophet,
Page 98, Mohammed and Mohamednisu. By Rev. Boswoth smith

2- He was now the servant prophet, the vice Gereint of God.
Page 48. Life of Mohamed, by Sir William Muir.

3- देखिए 'असह उस सियर' पेज 17 rFkk Life of Mohammed
का पेजे 525 by sir W, Muir

Scanned with CamScanner

इतना प्रभावोत्पादक होता था, कि लोग उनकी बातें नहीं भूलते थे[1]। पारस्परिक वार्तालाप में मुहम्मद साहब शान्त ही रहते थे, परन्तु अरब के लोग उनकी बातें सुनना बहुत पसन्द करते थे[2]।

(छ) दान- 'दान' धर्म का आवश्यक अंग है। दीनों को दान देना आठ गुणों में सातवां गुण है जो पुरुष को आलोकित करता है। लगभग प्रत्यक महापुरुष ने इसे स्वीकृत किया है। कल्कि को तो 'अष्टैश्वर्यगुणान्वित' कह कर पुराणों द्वारा उनमें आठों का सन्निवेश कर दिया गया है। मुहम्मद साहब दान देने में सतत लगे रहते थे। उनके घर में ग़रीबों की जमघट लगा रहता था[3]। वे किसी को निराश नही करते थे। सर विलियम म्योर ने भी मुहम्मद साहब को बहुत सुन्दर स्वरूप वाला, पराक्रमी तथा दानी बातया[4]।

(ज) कृतज्ञता- आठ दैवी गुणों में कृतज्ञता (किए गए उपकार को समझना) अन्तिम गुण है। इस गुण के अभाव में कोई भी महापुरुषत्व को नहीं प्राप्त करता है। कल्कि 'कृतज्ञता' को लेकर आठों गुणों की स्थिति की भविष्यवाणी पुराणों में है, जैसे कि पहले हम स्पष्ट कर चुके

1- He was of great tacitumity, but when he spoke, it was with emphasis and deliberation and no one could forget what he said. Page-xxix, introduction the speeches of Mohammed, by Lane-poole.

2- In his intercourse with others, he would sit silent among his companions for a long time together, but truly was more eloquent than other men's speech, for the moment, speech was called for, it was forth coming in the shape of some weighty apothegm of proverb such as Arabs love to hear.
Page-110 Mohammed and Mohammadenism by R. Bos Worth Smith.

3- "Indeed, outside the prophet's house was a bench of gallery, on which were always to be found a number of poor. Who lived entirely upon his generosity and were hence called, the people of the bench.
Page-xxx. Introduction, the speeches of Mohammed. By lane poole."

4- He was says an admiring follower, the handsomest and bravest, the bright faced and most generous of men.
Page 523, the life of Mohammad, by sir William Muir

Scanned with CamScanner

हैं। मुहम्मद साहब के भी ऊपर 7 गुणों की स्थिति स्पष्ट हो चुकी है, और कृतज्ञता की उनमें स्थिति को कोई भी इतिहासकार अस्वीकार नहीं कर सकता। अनसार के प्रति कहे गए वाक्य मुहम्मद साहब की कृतज्ञता का स्पष्टीकरण करते हैं[1]।

16– ईश्वरीय वाणी का उपदेष्टा- कल्कि के विषय में यह बात भारत में प्रसिद्ध ही है कि वह जो धर्म स्थापित करेंगे वह वैदिक धर्म होगा और उनके द्वारा उपदिष्ट शिक्षाएँ ईश्वरीय होंगी। मुहम्मद साहब के द्वारा अभिव्यक्त क़ुरआन ईश्वरीय वाणी है, यह तो स्पष्ट ही है, भले ही हठी लोग इस बात को न मानें क्योंकि क़ुरआन में जो नीति, सदाचार, प्रेम, उपकार, आदि करने के लिए प्रेरणा के स्रोत विद्यमान हैं वही वेद में भी हैं। क़ुरआन में मूर्ति-पूजा का खण्डन, एकेश्वरवाद (तौहीद) की शिक्षा, परस्पर प्रेम के व्यवहार का उपदेश है। वेद में एक सत् तथा विश्वबन्धुत्व की उत्कृष्ट घोषणा है। वेदों में ईश्वर की भक्ति का आदेश है और क़ुरआन की शिक्षा के अनुसार मुसलमान दिन में पाँच बार नमाज़ अवश्य पढ़ते हैं, जब कि ब्राह्मण वर्ग में विरले लोग ही त्रिकाल संध्या करनेवाले मिलेंगे। इस प्रकार हम देखते हैं कि कल्कि और मुहम्मद साहब के विषय में एक सी बातें हैं। अब उपसंहार के रूप में हम वेदों और क़ुरआन की मूल शिक्षाओं की समानता पर विचार प्रस्तुत करेंगे।

---

[1]- Asah us Siyar, page 343.

Scanned with CamScanner

वेदों और क़ुरआन की शिक्षाएँ

1. ईश्वर वह है, जिसके अतिरिक्त कोई दूसरा पूज्य नहीं, वह सदा रहनेवाला और स्वयं अपने में स्थित है और जितनी वस्तुएँ हैं, उसी पर आधारित हैं। जब तक उसकी आज्ञा न हो, कोई उसके प्रबन्ध में व्यवधान नहीं डाल सकता, वह हमारे आगे और पीछे की सब बात जानता है और उसके ज्ञान के भंडार से केवल उतना ही जान सकते हैं जितना वह चाहे, आकाश और पृथ्वी सब उसके ज्ञान के क्षेत्र में सम्मिलित हैं, वह इन सबको संभाले है, वह कभी थकता नहीं, वह सबके ऊपर और सबसे बड़ा है।

उपनिष्दों के 'एकं ब्रह्म द्वितीय नास्ति, नेहना नास्ति किंचन्' का अर्थ यह है कि वह ईश्वर एक है, उसके अतिरिक्त दूसरा नहीं है। यहाँ तो उसके बिना कुछ है ही नहीं अर्थात् जगत् का अस्तित्व तभी तक है जब तक ईश्वर की सत्ता जगत् को संभाले है। यदि ईश्वर की सत्ता को अस्वीकृत किया जाए, तो जगत् का अस्तित्व ही नहीं रहेगा।

2- जिसको कोई भी चक्षु के द्वारा नहीं देख सकता अपितु जिसने नेत्र अपने विषयों को देखता है, उसे ही तू ब्रह्म जान।[1] क़ुरआन में कहा गया है कि आँख उसे नहीं देख सकती पर वह सब आँखों को देखता है[2]।

3- तू हमें सीधे रास्ते पर ले चल[3]। ऋग्वेद में भी कहा गया है कि हे प्रकाशक परमेश्वर हमें सुन्दर रास्ते पर ले चलो[4]।

---

[1]– यच्चक्षुषा न पश्यति येन यक्षूपि पश्यति।
त्देव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते।।
केनोपनिषद् सामवेद तलवकार (ब्राह्मण) खण्ड, मंत्र-6

[2]– क़ुरआन, 6-102 से 104/1

[3]– क़ुरआन सूर 1, आयत 5/1

[4]– 'अग्नेनय सुपथा राये0 ऋग्वेद 1.189.1 वा. यः 3. 36, 7, 43, 40, 16
तै0 सं0 1.1.14., 3, 4, 43, 1 तै0 ब्रा0 2.8, 2, 3, तै आ0 1.8.8,
शातब्रा 14.8.3.1/'

Scanned with CamScanner

4- कह दो ईश्वर एक है, बाक़ी सब उसी के आश्रय है। न वह कभी जन्म लेता है और न किसी को जानता है। उसके जोड़ का कोई दूसरा नहीं है। परमेश्वर एक है, सभी प्राणियों में व्याप्त, सभी कर्मों का अध्यक्ष है, सभी के ऊपर है, सबका साक्षी (गवाह) है, सब कुछ जानता है और निर्गुण है[1]।

5- ईश्वर सत्य (अल्लाह हक़ है)[2]। वेदान्त में कहा गया है कि सत्यं ब्रह्म अर्थात ब्रह्म सत्य है।

6- जिधर भी तुम मुँह करो, उधर ही परमेश्वर का मुख[3]। गीता में कहा गया है कि विश्वतोमुखम् अर्थात् उसके सब तरफ़ मुख हैं[4]।

7- वेदों में और गीता तथा स्मृतियों में एक ईश्वर की भक्ति करने का आदेश है तथा अपनी की हुई बुराइयों की क्षमा माँगने के लिए भी उसी ईश्वर से प्रार्थना करने का आदेश हैं। क़ुरआन में कहा गया है, कि ऐ नबी कह दो! मैं तो केवल तुम्हारे जैसा एक मनुष्य हूँ। मेरी ओर वह्य की जाती है कि तुम्हारा इलाह (पूज्य) अकेला पूज्य है, तो तुम सीधे उसी की ओर मुख करो और क्षमा भी उसी से मांगो[5]।

8- वेदों (ईश्वरीय वाणी या ईश्वराज्ञा) पर श्रद्धा न करना एवं उसके उपदेशों को न मानना 'नास्तिकता' है। नास्तिकता का अर्थ है कि अस्वीकार करना। क़ुरआन में भी काफ़िर शब्द इसी अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। कुफ़्र का अर्थ है, अस्वीकार करना या भुला देना। ईश्वर तथा पैग़म्बरों

1– एको देवः सर्वभूतेषु गूढः सर्वभुतान्तरात्मा।
कर्माध्यक्षः सर्वभूताधिवासः साक्षी जेता केवलो निर्गणश्च।।
श्वेताश्वर उपनिषद अध्या 6, मंत्र 11

2– क़ुअरान 21.62

3– क़ुरआन 2.115/1

4 सहस्रशीर्षापुरुष सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमि विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशांगुलम्।।
ऋग्वेद 1090/1
समवेद 617, अथर्ववेद 19.61
व0 य0 31.1, ते आ0 3-12.1

5– क़ुरआन अस-सजदः।
'अध्याय 41, आयत नं0 6'

Scanned with CamScanner

को न माननेवालों के मुख से कहलाया गया है कि जो कुछ तुम कहते हो उसकी तरफ़ से हम काफ़िर हैं (अर्थात् उसको हम अस्वीकार करते हैं[1]।

9– मुसलमान का अर्थ है आज्ञा को माननेवाला। तात्पर्य यह कि ईश्वर पर, ईश्वरीय वाणियों पर तथा आप्त पुरुषों पर जो ईमान लाया, वही है मुसलमान। ठीक इसी शब्द के अनुरूप संस्कृत साहित्य में 'आस्तिक' शब्द आया है। आस्तिक का अर्थ है, ईश्वर, ईश्वरीयवाणी आप्त पुरुषों पर श्रद्धा रखनेवाला। जिस प्रकार आप्त पुरुषों की वाणी को संस्कृत साहित्य में आगम प्रमाण माना गया है। काफ़िर का ठीक विलोम मुसलमान है और नास्तिक का ठीक विलोम आस्तिक। काफ़िर से कोई मुसलमान तर्क करना नहीं चाहेगा और न तो नास्तिक से कोई आस्तिक भी बात करना स्वीकार करेगा। भारत में पचहत्तर प्रतिशत आस्तिक तथा पच्चीस प्रतिशत नास्तिक हैं। पढ़े लिखे समाज में नास्तिकों की संख्या अधिक है। नास्तिक और काफ़िर एक दूसरे के भाषान्तर हैं और मुसलमान और आस्तिक भाषान्तर हैं।

10- रही बात हिन्दू शब्द की, सो यह शब्द बिलकुल ही नवीन शब्द है। प्राचीन भारतीय धर्म को आर्य धर्म कहा जाता था या सनातन धर्म।

आर्य धर्म का अर्थ है श्रेष्ठ धर्म[2], और सनातन धर्म का अर्थ है, सब दिने से चला आनेवाला धर्म। सना- सब दिन। तन- चला आनेवाला। वेद की संस्कृत के 'स' कार को फारसी तथा ईरानी (ग्रीक) में 'ह' कार कहा जाता है। ग्रीक के लोग सिन्धु तट तक आते थे और सिन्धु के 'स' कार को 'ह' कार में बदल कर हिन्द शब्द बना दिए, स्थान को स्तान उच्चारण करके हिन्दुस्तान और वहाँ रहनेवाले लोगों को हिन्दू कहने लगे। उन ही लोगों के सम्पर्क में संस्कृत साहित्य से

1– क़ुरआन 34, 34

2– आर्यधर्मो कि ते राजन् सर्वधर्मोत्तमःस्मृतः।
ईशज्ञया करिष्यामि पैशाचं धर्मदारूणम्।।
भविष्यपुराण प्रतिसर्गपर्व, तृतीय खण्ड, अध्याय 3, 24वां श्लोक।

Scanned with CamScanner

अनभिज्ञ लोग भी हिन्दू और हिन्दुस्तान का उच्चारण करने लगे। मुसलमानों के राज्य से भारत को हिन्दुस्तान और भारतीयों को हिन्दू कहा जाने लगा तथा अंग्रेज़ी ने हिन्द शब्द में अपनी भाषागत विशेषता के कारण (हिन्द) भ्पदक को भ् का लोप करके प्दक ठण्ड और प्दकव तथा देश सूचक पं जोड़कर प्दकपं (इण्डिया) शब्द बना लिया। इण्डिया में रहनेवाले इण्डियन कहे जाने लगे। अतएव भारतीय, हिन्दू और इण्डियन शब्दों का एक ही अर्थ हुआ। भारत हिन्दुस्तान, इण्डिया में रहनेवाला। यदि कोई भारत हिन्दुस्तान तथा इण्डिया को एकार्थक न माने तो उसका अल्पज्ञान है।

भारत में रहनेवाला ईसाई, मुसलमान, द्रविड़, कोल, किरात, भिल्ल पारसी, संथाल आदि सभी हिन्दू (हिन्दी) हैं, सभी इण्डियन हैं, सभी भारतीय हैं। यह भाषा विज्ञान से सिद्ध है। हिन्दु धर्म, इण्डियन धर्म, सनातन या आर्य धर्म में भेद नहीं है। भेद केवल भाषा है।

उपंसहार

केवल मैं ही नहीं, सभी शिक्षित वर्ग पक्षपात रहित होकर सम्पूर्ण राष्ट्रों की एकता के उद्देश्य से इस शोध पुस्तक को अवश्य स्वीकार करके राष्ट्र के भावी जीवन को शान्तिप्रिय बनाएं। भारतीय जिन कल्कि को भगवान मानते हैं, मुसलमान उन ही कल्कि के चेले हैं। कल्कि के विषय में कहा गया है, कि यह भारतीयों का बहुत ही बड़ा कल्याण करेंगे। इस भावना को लेकर प्रत्येक भारतीय स्वयं को हिन्दू कहे या इण्डियन, कल्कि पर विश्वास करे, क्योंकि अन्तिम अवतार हैं जो घोड़े पर चढ़ना तथा तलवार धारण करना स्वीकार करेंगे। अब जो भावी युग आ रहा है, वह घोड़ों और तलवारों के युग से काफी दूर होता जा रहा है। भारतीय मुसलमानों को दूसरा नहीं समझें, क्योंकि वे भारतीयों के सबसे बड़े हितैषी सिद्ध होंगे। इस्लाम, मुसलमान अरबी भाषा के शब्द हैं, जिनका अर्थ ईश्वराज्ञापालन धर्म या सनातन धर्म तथा आस्तिक होता है।

Scanned with CamScanner

जो धर्म के अन्धे अनुयायी होकर अपने सनातन धर्म को सीमित बना देते हैं, और दूसरे धर्मों को न समझते हुए परस्पर विद्रोह करते हैं, वे ईश्वर के राज्य में अग्नि द्वारा तपाए जाते हैं। मैंने अपने इस शोधपत्र को किसी पक्षपात की भावना से नहीं लिखा है। अन्तर्यामी का मुझे आदेश मिलता है, कि हिन्दू-मुस्लिम एकता का बाधक जो विद्रोह कभी-कभी खड़ा हो जाता है और ईश्वर की दुहाई देकर दोनों पक्ष एक-दूसरे का संहार करते हैं, यह ईश्वर को बुरा लगता है। शिक्षा देना उपदेशक का काम है पालन कराना उपदेशक के ज़िम्मे नहीं है। वह तो ईश्वर के ज़िम्मे है। एक मनुष्य क्या किसी से कुछ कराएगा? ईसा ने जिन अहमद (ईश्वर के प्रशसंक) के विषय में भविष्यवाणी की, वेदव्यास जी ने भावी वृत्तान्त के रूप में जिन कल्कि का व्याख्यान किया, उन ही की गवाही देना मेरा कर्म है। ईसाई कल्कि को मानें या न मानें परन्तु भारतीय तो अवश्य उसे मानेंगे।

कल्कि और मुहम्मद साहब के विषय में जो अभूतपूर्व साम्य मुझे मिला, उसे देखकर यह आश्चर्य होता है कि जिन कल्कि की प्रतिज्ञा में भारतीय बैठे हैं, वे हो गए और वही मुहम्मद साहब हैं। दोनों के साम्य में यदि कहीं कोई बाधक प्रमाण मिले, तो या तो उन्हें क्षेपक समझ लेना चाहिए या "हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता" से युगानुसार चरित वैभिन्न। मौलिक धर्म सिद्धान्त प्रायः एक ही हैं, परन्तु अल्पबुद्धि के लोगों को वह बोध-गम्य नहीं।

कुछ समय पहले वैदिक धर्म में मिश्रित बुराइयों का निराकरण करनेवाले बुद्ध जी द्वारा उपदिष्ट धर्म एवं तद्धर्मानुयायियों को घृणा की दृष्टि से देखा जाता था और लोग यह समझते थे कि वैदिक धर्म से अतिरिक्त यह नया धर्म है परन्तु पुराणों के चौबीस अवतारों के प्रकरण में जब यह पढ़ा गया कि बुद्ध जी तेईसवां अवतार हैं, तब लोगों की समझ में आया, कि यह धर्म अपना धर्म ही है और बुद्ध जी तो अवतार ही है, तब वैदिक एवं बौद्धों का भेद दूर हो गया और आज बौद्ध भी वैदिक धर्मानुगत ही आते हैं। उसी प्रकार मुहम्मद साहब द्वारा प्रदर्शित सनातन धर्म तथा उनके अनुयायियों को देखकर यह लगता है कि यह तो वैदिक धर्म का उल्टा ही धर्म है, परन्तु चौबीस अवतारों के प्रकरण

Scanned with CamScanner

में भागवत पुराण में जब मैंने कल्कि को देखा तथा स्कन्ध में उनके होनेवाले वृत्तान्त को पढ़ा, तब मुहम्मद साहब से पूर्ण समानता मिली और मुझे विश्वास हो गया कि यही हैं कल्कि और उनके धर्म की बाढ़ तथा अनुयायियों की वृद्धि से तो अपना वैदिक धर्म ही पुष्ट होता है। अभी न सही, जब इस बात का सबको ज्ञान हो जाएगा, तब मुसलमानों का इस्लाम धर्म या आस्तिकों का ईश्वराज्ञा-पालन धर्म, भारत में प्रचलित वैष्णव, शैव, शाक्त, जैन तथा बौद्ध धर्म की भाँति सभी लोगों द्वारा स्वीकृत होगा, तथा भारतीयों का और मुसलमानों का वर्ग मिलकर एक बहुत बड़ा समाज बनेगा। लाठी डंडों की चोट से धर्म नहीं फैलता, अपितु लोगों को जब ईश्वर की कृपा से धर्म के सत्य स्वरूप का ज्ञान हो जाता है, तो वे स्वयं धर्म का आचरण करने लगते हैं। धर्म के जानकार का कर्त्तव्य है कि धर्म के सिद्धान्तों से लोगों को अवगत कराए, वे श्रद्धा उत्पन्न होने पर उसे स्वयं मानेंगे, दंगा करने पर थोड़े कोई मानता है। ईश्वरीय धर्म के प्रचारकों को तो शान्तिपूर्वक धर्म का प्रचार करना है। धर्म का सम्बन्ध वेष-भूषा से नहीं है, धर्म का सम्बन्ध हृदय में सन्निहित उन विचारों से है, जिनसे जीवन की यात्रा सुचारू रूप से सम्पन्न हो।

प्रत्येक हिन्दू, भारतीय या इण्डियन को यह ज्ञात होना चाहिए कि केवल वे ही हिन्दू नहीं हैं, बल्कि यहाँ रहनवाले मुसलमान तथा ईसाई भी हिन्दू हैं, क्योंकि हिन्दू शब्द का अर्थ होता है कि जो हिन्दुस्तान में रहे।

Scanned with CamScanner

सारस्वत-वेदान्त-प्रकाश-संघ

एक ही धर्म के अनेकों टुकड़े हो गए हैं। जिससे धर्म का स्वरूप बिगड़ गया है। आवश्यकता है उन टुकड़ों के फिर जुड़ने की, और सतयुग के सम्पादन की।

ईश्वरीय वाणी वेदों और वेदान्त पर श्रद्धा उत्पन्न कराना, इस्लाम धर्म एवं ईसाई धर्म का वैदिक धर्म से समन्वय व्यक्त करके समाज में एकता एवं एकेश्वरवाद का सन्देश देना, समाज के अन्तर्गत एवं धर्म रूपी दूध में पड़ी हुई अन्धविश्वास रूपी मक्खी को निकाल फेंकना, लकीर के फ़क़ीर एवं कूपमण्डूक लोगों को धर्म जीवन के सीमित दायरे से निकालकर व्यापक धर्म का संसार दिखाना, धार्मिक कलहों को शान्त कराने के लिए लोगों में सद्भावना का प्रचार करना इस संध का मूल उद्देश्य है।

इस संघ का राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं।

(वैदिक धर्म ईशाज्ञाधर्म और इस्लाम धर्म ईशाज्ञापालन धर्म में चीनी और उसकी मिठास का सम्बन्ध है। यदि वैदिक धर्म में एकेश्वरवाद का सन्देश है तो इस्लाम धर्म में एकेश्वरवाद का पालन)।

Scanned with CamScanner